अर्थ—उन १२ सभाओं में अनुक्रमसे मुनि तथा गणधरदेव १., कल्पवासी देवोंकी देवांगनाएं, २. अर्जिका, ३. ज्योतिस देवों की स्त्रियाँ, ४. व्यंतर देवों की स्त्रियाँ, ५. भवनवासी देवों की स्त्रियाँ, ६. भवनवासी, ७. व्यन्तर, ८. ज्योतिषी, ९. कल्पवासी, १०. मनुष्य, ११. पशु, १२. बैठते हैं।

वैडूर्य्य स्वर्णमाणिक्य। मयंपीठत्रयंततः।
अष्टचतुश्चतुश्चाप। प्रांशुपर्यु परिस्थितिम्।।

अर्थात्—उस अष्ट भूमि के मध्य में वैडूर्यमणि स्वर्ण माणिक्य में तीन पीठ क्रम से आठ धनुष हैं, चार चार धनुष ऊंचे एक के ऊपर एक स्थित हैं।

श्लोक सोपानाः षोडशाष्टार्ता नानारत्न विचित्रताः।
क्रमशः त्रिषुपीठेषु चतुर्मार्गेषु भांतिते।।

अर्थात्—उन तीनों पीठों में क्रम से सोलह आठ और आठ सीढ़ियाँ नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित चारों ओर शोभायमान थीं। यह शोभा चारों ओर से दिखाई दे रही थी सबके ऊपर के तीसरे पीठ पर छह सौ धनुष लम्बी व इतनी ही चौड़ी तथा नौ सौ धनुष ऊंची जिसमें रत्नों की दीपिका प्रज्वलित हो रही थी व अत्यन्त सुगन्धित पुष्प व ध्वजायें जिसके चारों तरफ सुशोभित हो रही थीं, ऐसी जिन भगवान् के विराजमान होने की गन्धकुटी बनी थी उसके ऊपर अत्यन्त मनोहर नाना प्रकार के रत्नों से जड़ित स्फटिक मणि का बना हुआ एक सिंहासन है। उसके बीच में अत्यन्त कोमल, पवित्र व अनुपम सहस्रदलवाला एक रक्त वर्ण कमल है। उसके मध्य मार्ग में चार अंगुल अन्तरिक्ष आकाश में जिन भगवान् लोकाकाश व आलोकाकाश को देखते हुए विराजमान होते हैं। और जीवों के शुभाशुभ को जानकर त्रिजगपति अर्थात् तीनों लोक के नाथ श्री जिनेन्द्र देव अपनी मेघ के समान सर्वभाषा भावयुक्त निरक्षर दिव्य ध्वनि से सत्य धर्म के उपदेश की वर्षा करते हैं, और द्वादस सभाओं में असंख्यात जीव अपने अपने भवताप से संतापित आत्मा की शान्ति के लिए धर्मोपदेशामृत का पान करते हैं, जिनेन्द्रदेव के समवशरण में मिथ्यादृष्टि, अभव्य, असंज्ञी, अनध्यवसायी जीव नहीं रहते।

श्री धर्मसंग्रह श्रावकाचार में कहा है—

मिथ्यादृष्टिरभव्योप्य-संज्ञी कोपि न विद्यते।
यश्चानध्यवसायोपि तः संदिग्धो विपर्ययः।।

और भगवान् के समवशरण में जीवों में परस्पर शत्रुभाव भी नहीं रहता है।
कहा भी है कि—अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।

अर्थ—बहुल काल तक अहिंसा धर्म पालन करने वाले के समीप जाति विरोधी जीवों में भी परस्पर में वैरभाव त्याग का व्यवहार हो जाता है। यह केवल जिनेन्द्र भगवान् का ही प्रभाव है।

इति समवशरण वर्णनसमाप्तः

जिन भगवान् को १००८ नामों से विनय सहित नमस्कार करते हैं:

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः ।।१।। अनंतचतुष्टयरूप अन्तरंगलक्ष्मी व समवशरणरूप बहिरंग लक्ष्मी से सुशोभित हैं, इसलिए आप श्रीमान् कहलाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयम्भुवे नमः ।।२।। बिना गुरु के अपने आप समस्त पदार्थों को जानने वाले हैं अथवा अपनी आत्मा में सदैव रत रहते हैं, अथवा अपने आप ही अपना कल्याण किया है, अथवा अपने ही गुणों से स्वयमेव वृद्धि को प्राप्त हुए हैं।

अपने आप केवल ज्ञान और केवल दर्शन के द्वारा समस्त लोकालोक में व्याप्त हो रहे हैं, अथवा भव्य जीवों को मोक्षरूपी सम्पत्ति को देने वाले हैं, तथा द्रव्य पर्यायों को इन्द्रियादि की सहायता रहित अपने आप जानने वाले हैं अथवा ध्यान करने वाले योगियों को आप प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं अथवा लोक शिखर पर अपने आप जाकर विराजमान होने वाले हैं इसलिए आप स्वयंभू कहलाते हैं ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः ॥३॥ आप वृष अर्थात् धर्म से भा अर्थात् सुशोभित होते हैं अथवा धर्म की वर्षा करते हैं अथवा भक्त जनों के लिए इष्ट वस्तु की वर्षा करने वाले हैं, इसलिए आप वृषभ कहलाते हैं ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्भवाय नमः ॥४॥ आपके द्वारा सभी जीवों को सुख प्राप्त होता है एवं आप का भाव जन्म अत्यन्त उत्कृष्ट है, अथवा आप सुखपूर्वक उत्पन्न हुए हैं, इसलिए आप सम्भव वा शम्भव कहलाते हैं ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं शम्भुवे नमः ॥५॥ आप परमानन्द मोक्षरूपी सुख को देने वाले हैं। इसलिए आप शम्भू कहलाते हैं ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः ॥६॥ आप अपने आत्मा के द्वारा ही कृतकृत्य हैं अथवा आप शुद्ध-बुद्ध चित्चमत्कार स्वरूप आत्मा में लीन रहते हैं अथवा ध्यान के द्वारा योगियों के आत्मा में ही प्रत्यक्ष होते हैं। इसलिए आप आत्मभू कहलाते हैं ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयम्प्रभाय नमः ॥७॥ आप अपनेआप ही प्रकाशमान होते हैं अथवा शोभायमान होते हैं इसलिए आप स्वयं-प्रभ कहलाते हैं ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवते नमः ॥८॥ सबके स्वामी हैं या सर्वथा समर्थ हैं, इसलिए आप प्रभु हैं ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोक्तये नमः ॥९॥ आप परमानन्द स्वरूप सुख का भोग करने वाले होने से अपने आप भोक्ता हैं ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः ॥१०॥ आप केवलज्ञान के द्वारा सब स्थानों पर व्याप्त हैं, अथवा समस्त लोकों में मंगल करने वाले हैं, अथवा ध्यानादि के द्वारा समस्त लोक में प्रगट होते हैं अथवा समस्त लोकालोक को जानने वाले हैं, इसलिए आप विश्वभू हैं ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः ॥११॥ अब आपके जन्म, जरा, मरणरूप संसार शेष नहीं रह गया है अथवा आप संसार में ही पुनः उत्पन्न होने वाले नहीं हैं इसलिए आप को अपुनर्भव कहते हैं ॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः ॥१२॥ आप समस्त लोक को अपने समान जानते हैं अथवा आप विश्व अर्थात् केवलज्ञान स्वरूप हैं इसलिए आप विश्वात्मा कहे जाते हैं ॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय नमः ॥१३॥ तीनों लोकों में रहने वाले समस्त प्राणियों के आप स्वामी हैं इसलिये विश्व लोकेश हैं ॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतच्चक्षुषे नम : ॥१४॥ आप के चक्षु अर्थात् केवल दर्शन सर्व जगत् में व्याप्त है इसलिए आप विश्वतच्चक्षु हैं ॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः ॥१५॥ कभी नाश नहीं होते इसलिए आप अक्षर हैं ॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः ॥१६॥ आप षट् द्रव्यों से भरे हुए इस विश्व अर्थात् जगत का जानते हैं। इसलिए विश्ववित् है ॥१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः ॥१७॥ समस्त विद्याओं के ईश्वर आप हैं, आप केवल ज्ञान के स्वामी हैं, आप समस्त विद्याओं के जानने वाले गणधरादिकों के स्वामी हैं इसलिए आप विश्वविद्येश कहे जाते हैं ॥१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः ॥१८॥ आप समस्त पदार्थों की उत्पत्ति के कारण हैं अर्थात् सब पदार्थों का उपदेश देने वाले हैं इसलिए आप विश्वयोनि कहलाते हैं ॥१८॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय नमः ॥१९॥ आपके स्वरूप का कभी नाश नहीं होता इसलिए आप अनश्वर कहे जाते हैं ॥१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदर्शने नमः ॥२०॥ आप समस्त लोकालोक को देखने से विश्व द्रष्टा कहलाते हैं ॥२०॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभुवे नमः ॥२१॥ केवलज्ञान के द्वारा आप सब जगह व्याप्त हैं अथवा जीवों को संसार से पार करने में समर्थ हैं और आप परम विभूति संयुक्त हैं, इसलिए आप को विभू कहते हैं ॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः ॥२२॥ चारों गतियों में परिभ्रमण करने वाले जीवों का उद्धार कर मोक्ष स्थान में पहुंचाने वाले हैं तथा दयालु होने से आप सब जीवों की रक्षा करते हैं इसलिए आप धाता कहलाते है ॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः ॥२३॥ समस्त जगत के स्वामी होने से आप विश्वेश कहलाते हैं ॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय नमः ॥२४॥ समस्त जीवों को सुख की प्राप्ति का उपाय आपने दिखलाया है इसलिए आप जीवों के नेत्रों के समान होने से विश्वलोचन कहलाते हैं ॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्व व्यापिने नमः ॥२५॥ केवलज्ञान के द्वारा समस्त लोकालोक में आप व्याप्त हैं और केवलि समुद्घात करते समय आप के आत्मा के प्रदेश समस्त लोकाकाश में व्याप्त हो जाते हैं इसलिए आपको विश्वव्यापी कहते हैं ॥२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं विधवे नमः ॥२६॥ आप कर्मों का नाश करने वाले हैं अथवा केवल-ज्ञान रूपी किरणों के द्वारा मोहरूपी अंधकार का नाश करने वाले हैं इसलिए आप विधु हैं ॥२६॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेधाय नमः ॥२७॥ आप धर्म रूप जगत को उत्पन्न करने वाले हैं इसलिए आप वेधा कहलाते हैं ॥२७॥

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः ॥२८॥ आप सदा विद्यमान रहते हैं, नित्य हैं इसलिए शाश्वत् कहे जाते हैं ॥२८॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतो मुखाय नमः ॥२९॥ आप के चारों दिशाओं में चार मुख दीखते हैं तथा आपके मुख के दर्शन मात्र से जीवों का संसार नष्ट हो जाता है जल का मुख्य नाम विश्व है, आप जल के समान कर्मरूपी मल को धोने वाले हैं। विषयों की तृष्णा को नष्ट करने वाले और अत्यन्त स्वच्छ हैं इसलिए आप विश्वतो मुख कहलाते हैं ॥२९॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः ॥३०॥ आप के मत में समस्त कर्म ही दुख देने वाले हैं एवं आप ने जीविका के लिए षट् कर्मों का उपदेश दिया है इसलिए आपको विश्वकर्मा कहते हैं ॥३०॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय नमः ।।३१।। आप जगत के समस्त प्राणियों में वृद्ध हैं अथवा श्रेष्ठ हैं इसलिए आपको जगज्ज्येष्ठ कहते हैं ।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तये नमः ।।३२।। आप अनन्तगुण मय हैं इसलिए आप विश्व-मूर्ति कहलाते हैं ।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः ।।३३।। अनेक कर्मों के नाश करने में गणधर देवों को अथवा चौथे गुण स्थान से बारहवें गुणस्थान तक रहने वाले जीवों को जिन कहते हैं, आप उनके ईश्वर हैं इसलिए आपको जिनेश्वर कहते हैं ।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वे नमः ।।३४।। आप समस्त लोक को देते हैं इसलिए आप विश्वदृक् कहलाते हैं ।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः ।।३५।। आप समस्त प्राणियों के ईश्वर हैं और तीन जगत की लक्ष्मी के पति हैं इसलिए आप विश्वभूतेश कहे जाते हैं ।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे नमः ।।३६।। आपका केवल दर्शन रूपी तेज सब जगह भरा हुआ है तथा आप समस्त जगत में प्रकाश करने वाले हैं। इसलिए विश्वज्योति कहलाते हैं ।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः ।।३७।। आपका कोई ईश्वर या स्वामी नहीं है इसलिए आपको अनीश्वर कहते हैं ।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः ।।३८।। आप ने कर्मरूपी शत्रु अथवा काम क्रोध आदि राग द्वेष शत्रु जीते हैं इसलिए आप जिन कहलाते हैं ।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः ।।३९।। आपका स्वभाव ही सबसे उत्कृष्ट रूप तथा प्रकाश रूप है इसलिए जिष्णु कहे जाते हैं ।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः ।।४०।। आपका ज्ञान प्रमाण रहित अनन्त है इसलिए आप अमेयात्मा कहलाते हैं ।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशायनमः ।।४१।। आप विश्वरी अर्थात् पृथ्वी के ईश यानी स्वामी हैं इसलिए विश्वरीश कहलाते हैं ।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतये नमः ।।४२।। आप तीनों लोकों के स्वामी हैं, इसलिए त्रिजगत्पति कहे जाते हैं ।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तजिते नमः ।।४३।। आप अनन्त संसार को जीतने वाले हैं तथा मोक्ष को रोकने वाले अनन्तनाम के ग्रह को जीतने वाले हैं, इसलिए आप अनन्त जित् कहे जाते हैं ।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्यात्मने नमः ।।४४।। आपके आत्मा का स्वरूप मन से भी चित-वर्णन नहीं किया जा सकता इसलिए आपको अचिंत्यात्मा कहते हैं ।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्य बंधवे नमः ।।४५।। आप भव्य जीवों का सदा उपकार करते हैं इसलिए भव्य बन्धु कहलाते हैं ।।४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अबंधनाय नमः ।।४६।। आपको कर्म का बन्ध नहीं है, अथवा घातिया कर्मों के द्वारा आप बंधे हुए नहीं है, इसलिए आप अबंधन कहे जाते हैं ।।४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादि पुरुषाय नमः ।।४७।। आप कर्मभूमि के प्रारम्भ में हुए हैं इसलिए युगादि पुरुष कहलाते हैं ।।४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः ।।४८।। आपके यहां केवलज्ञान आदि समस्त गुण वृद्धि को प्राप्त होते हैं इसलिए आप ब्रह्मा कहे जाते हैं ।।४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय नमः ।।४९।। आप पंचपरमेष्ठी स्वरूप हैं इसलिए आप पंचब्रह्ममय कहलाते हैं ।।४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः ।।५०।। आप सदा परमानन्द में रहते हैं, तथा आप सब का कल्याण करने वाले हैं इसलिए आपको शिव कहते हैं ।।५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः ।।५१।। आप जीवों को मोक्ष स्थान में पहुंचाते हैं इसलिए पर कहे जाते हैं ।।५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः ।।५२।। धर्मोपदेश देने से आप सबके गुरु हैं एवं सबसे श्रेष्ठ हैं इसलिए परतर कहे जाते हैं ।।५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः ।।५३।। आप इन्द्रियों के द्वारा नहीं जाने जा सकते। आप केवलज्ञान के द्वारा ही जाने जा सकते हैं इसलिए आप सूक्ष्म कहलाते हैं ।।५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः ।।५४।। इन्द्रादिकों के द्वारा पूज्य ऐसे मोक्षस्थान में एवं अरहंत पद में रहने के कारण आप परमेष्ठी कहलाते हैं ।।५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः ।।५५।। तीनों कालों में आप सदा नित्य रहते हैं इसलिए सनातन कहे जाते हैं ।।५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः ।।५६।। आप स्वयं प्रकाश रूप हैं, इसलिए स्वयं ज्योति हैं ।।५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः ।।५७।। आप संसार में उत्पन्न नहीं होते इसलिए आप अज हैं ।।५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः ।।५८।। आप किसी शरीर को धारण नहीं करते इसलिए आप अजन्मा हैं ।।५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः ।।५९।। आप ब्रह्म अर्थात् सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की योनि अर्थात् खान हैं, इसलिए आप ब्रह्मयोनि कहे जाते हैं ।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजायनमः ।।६०।। आप मोक्ष स्थान में चौरासी लाख योनियों से रहित हो कर उत्पन्न होते हैं, इसलिए आप अयोनिज कहलाते हैं ।।६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिविजयिने नमः ।।६१।। आप मोहनीय कर्म रूपी शत्रु को जीतने वाले हैं इसलिए आप मोहारिविजयी कहे जाते है ।।६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः ।।६२।। आप सब से उत्कृष्ट रीति से रहते हैं इसलिए आप जेता कहे जाते हैं ।।६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे नमः ।।६३।। गमन करते समय सदा आपके आगे धर्मचक्र रहता है इसलिए आपको धर्मचक्री कहते हैं ।।६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः ।।६४।। सब प्राणियों पर दया करने रूपी आपकी प्रसिद्ध ध्वजा फ़हरा रही है इसलिए आप दयाध्वज कहलाते हैं ।।६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतारिणे नमः ।।६५।। आपके कर्मरूपी शत्रु शांत हो गए हैं इसलिए आप प्रशांतारि कहलाते हैं ।।६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतात्मने नमः ।।६६।। आप अनंत गुणों को धारण करने वाले हैं तथा आपकी आत्मा कभी नष्ट नहीं होती और आप केवलज्ञानी हैं इसलिए अनंतात्मा कहे जाते हैं ।।६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः ॥६७॥ आपने अपने योगों का निरोध किया है इसलिए आप योगी हैं ॥६७॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः ॥६८॥ गणधरादि योगीश्वर भी आपकी पूजा करते हैं इसलिए आप योगीश्वरार्चित हैं ॥६८॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः ॥६९॥ आप अपने ब्रह्म अर्थात् आत्मा का स्वरूप जानते हैं इस-लिए आप ब्रह्मवित् हैं ॥६९॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्वज्ञाय नमः ॥७०॥ आप ब्रह्म तत्व अर्थात् आत्मतत्व का अथवा केवलज्ञान का या दया का अथवा कामदेव के नष्ट करने का मर्म जानते हैं इसलिए आप ब्रह्मतत्वज्ञ हैं ॥७०॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः ॥७१॥ आप ब्रह्म अर्थात् आत्मा के द्वारा कहे हुए समस्त तत्वों को अथवा आत्मविद्या को जानते हैं, इसलिए आप ब्रह्मोद्यावित् कहलाते हैं ॥७१॥

ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः ॥७२॥ रत्नत्रय सिद्ध करने वाले यतियों में भी आप श्रेष्ठ हैं इसलिए यतीश्वर कहे जाते हैं ॥७२॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धायनमः ॥७३॥ क्रोध आदि कषायों से रहित होने से आप शुद्ध हैं ॥७३॥

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः ॥७४॥ केवलज्ञानी होने से अथवा सबको जानने से आप बुद्ध हैं ॥७४॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने नमः ॥७५॥ अपने आत्मा का स्वरूप जानते हैं इसलिए प्रबुद्धात्मा हैं ॥७५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय नमः ॥७६॥ धर्म,अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ आपको सिद्ध हो चुके हैं तथा मोक्ष प्राप्त करने का ही आपका मुख्य प्रयोजन है एवं आपके द्वारा ही जीवादि पदार्थों की सिद्धि होती है तथा मोक्षका अर्थ अर्थात् कारण रत्नत्रय आपको सिद्ध हो चुका है इसलिए आपको सिद्धार्थ कहते हैं ॥७६॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धशासनाय नमः ॥७७॥ आपका शासन अर्थात् मत पूर्ण तथा प्रसिद्ध है, इस-लिए आप सिद्ध शासन कहलाते हैं ॥७७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः ॥७८॥ आपके द्वारा कर्मों के नाश होने से आप सिद्ध कहलाते हैं ॥७८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धान्तविदे नमः ॥७९॥ आप द्वादशांग सिद्धान्त के पारगामी हैं, इसलिए आप सिद्धान्तविद कहलाते हैं ॥७९॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः ॥८०॥ योगी लोग भी आपका ध्यान करते हैं, इसलिए आप ध्येय हैं ॥८०॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्याय नमः ॥८१॥ आपकी आराधना मुनिजन तथा सिद्ध जाति के देव भी करते हैं इसलिए आप सिद्ध साध्य कहलाते हैं ॥८१॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिते नमः ॥८२॥ आप सम्पूर्ण जगत के हितकारी हैं, इसलिए आप जगत हित कहलाते हैं ॥८२॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः ॥८३॥ आप सहनशील होने से सहिष्णु कहलाते हैं ॥८३॥

ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः ।।८४।। आप आत्मा के स्वरूप से कभी भी च्युत नहीं होते इसलिए आप अच्युत हैं ।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः ।।८५।। आपके गुणों का अन्त नहीं है तथा आपके गुण नाशवान् नहीं इसलिए आप अनन्त हैं ।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः ।।८६।। आप के अन्दर अनन्त शक्ति है इसलिये आप प्रभविष्णु कहलाते हैं ।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः ।।८७।। संसार में जन्म मरण से आप मुक्त हो चुके हैं एवं संसार में आपका जन्म उत्कृष्ट गिना जाता है इसलिये आप भवोद्भव हैं ।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः ।।८८।। आपकी स्वाभाविक परिणति समय-समय में परिणमनशील है अथवा सौ इन्द्रों के प्रभुत्व को प्राप्त करने का आपका स्वभाव है इसलिये आप प्रभविष्णु कहलाते हैं ।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः ।।८९।। आप बुढ़ापे से रहित हैं अतः आप अजर कहलाते हैं ।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजयाय नमः ।।९०।। आपको कोई भी जीत नहीं सकता इसलिए आप अजय हैं ।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः ।।९१।। करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति से भी आपकी कान्ति अधिक है इसलिए आप भ्राजिष्णु कहलाते हैं ।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः ।।९२।। आप पूर्ण ज्ञान के स्वामी हैं इसलिए आप धीश्वर कहलाते हैं ।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः ।।९३।। आप सदा अविनाशी हैं। आप कभी नाशक रूप अथवा न्यूनाधिक नहीं होते इसलिए आप अव्यय कहलाते हैं ।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभावसवे नमः ।।९४।। कर्मरूपी काष्ठ को जलाने से आप विभावसु अर्थात् अग्नि हैं। मोहरूपी अन्धकार को नाश करने से आप विभावसु अर्थात् सूर्य हैं, अथवा धर्म रूपी अमृत की वर्षा करने से विभावसु अर्थात् सूर्य हैं, तथा राग-द्वेष आदि विभाव परिणामों को आपने नाश किया है इसलिए भी आप विभावसु कहलाते हैं ।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंभूष्णवे नमः ।।९५।। संसार में उत्पन्न होने का आपका स्वभाव नहीं है इसलिए आप असंभूष्णु हैं ।।९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयम्भूष्णवे नमः ।।९६।। अपने आप ही आप प्रगट अर्थात् प्रकाशमान हुये हैं इसलिये आप स्वयम्भूष्णु कहलाते हैं ।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः ।।९७।। आप अनादि सिद्ध हैं, इसलिए पुरातन हैं ।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः ।।९८।। आपका आत्मा परमोत्कृष्ट है इसलिये आप परमात्मा कहलाते हैं ।।९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं परंज्योतिषे नमः ।।९९।। आप मोक्षमार्ग को प्रगट करने वाले हैं इसलिये आप परंज्योति कहलाते हैं और तीनों लोकों में आपही उत्कृष्ट हैं ।।९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः ।।१००।। आप तीनों लोकों के स्वामी हैं इसलिए आप त्रिजगत्परमेश्वर कहलाते हैं ।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषा पतये नमः ।।१०१।। आप दिव्य ध्वनि के स्वामी हैं, इसलिये आप दिव्य भाषा पति हैं ।।१०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः ।।१०२।। आप अत्यन्त मनोहर होने से दिव्य हैं ।।१०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः ।।१०३।। आपकी वाणी सर्वथा निर्दोष है इसलिये आप पूतवाक् कहलाते हैं ।।१०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासनाय नमः ।।१०४।। आपका उपदेश अथवा मत पवित्र होने से आप पूत शासन हैं ।।१०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः ।।१०५।। आपका आत्मा पवित्र है अथवा आप भव्य जीवों को पवित्र करने वाले हैं। अतः आप पूतात्मा कहलाते हैं ।।१०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं परम ज्योतिषे नमः ।।१०६।। आपका केवलज्ञान रूपी तेज सर्वोत्कृष्ट है। इसलिये आप परम ज्योति हैं ।।१०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्याय नमः ।।१०७।। आप धर्म के प्रमुख अधिकारी हैं इसलिए धर्माध्यक्ष हैं ।।१०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः ।।१०८।। आप इन्द्रियों को निग्रह करने में श्रेष्ठ हैं इसलिए दमीश्वर कहलाते हैं ।।१०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः ।।१०९।। आप मोक्षादि लक्ष्मी के भोक्ता वा स्वामी हैं अतएव आप श्रीपति हैं ।।१०९।।

ॐ ह्रीं अर्हं भर्हते नमः ।।११०।। आप महाज्ञानी होने से भगवान् हैं ।।११०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः ।।१११।। आप परम पूज्य होने से तथा सभी के द्वारा आराधना करने के योग्य होने से अर्हन्त हैं ।।१११।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरजाय नमः ।।११२।। आप कर्म रूपी रज से रहित होने से अरजा हैं ।।११२।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरजाय नमः ।।११३।। आप के द्वारा भव्य जीवों के कर्ममल दूर होते हैं तथा आप ज्ञानावरण दर्शनावरण से रहित हैं अतएव विरजा हैं ।।११३।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः ।।११४।। आप परम पवित्र हैं कि वा पूर्ण ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले हैं अथवा मलमूत्र रहित हैं एवं मोहरहित हैं अतः आप शुचि हैं ।।११४।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः ।।११५।। आप धर्मरूपी तीर्थ के कर्ता हैं तथा संसार से पार करने वाले द्वादशांग रूपी तीर्थ कर्ता हैं इसलिए आप तीर्थकृत हैं ।।११५।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः ।।११६।। आप केवलज्ञान से युक्त होने से केवली हैं ।।११६।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः ।।११७।। आप अनन्त शक्तिमान् हैं तथा सबके ईश्वर हैं इसलिए आप ईशान हैं ।।११७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः ।।११८।। आप आठ प्रकार की पूजा के लिए योग्य होने से पूजार्ह हैं ।।११८।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकायनमः ।।११९।। आपने अपने घातिया कर्मों का नाश कर दिया है तथा पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है इसलिये आप स्नातक हैं ।।११९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः ।।१२०।। आप धातु उपधातु आदि मल रहित होने से अमल हैं ।।१२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदीप्तये नमः ।।१२१।। आपकी केवलज्ञान दीप्ति अथवा आपके शरीर की कान्ति अनन्त है अतः आप अनन्तदीप्ति कहलाते हैं ।।१२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मने नमः ।।१२२।। आप ज्ञानरूप होने से ज्ञानात्म कहलाते हैं ।।१२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वम्बुद्धये नमः ।।१२३।। अपने आप ही मोक्ष मार्ग में आप प्रवृत हुये हैं अथवा बिना गुरु के स्वयं महाज्ञानी हुए हैं इसलिए आप स्वम्बुद्ध कहलाते हैं ।।१२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः ।।१२४।। आप तीनों लोको के स्वामी होने से अथवा सभी को उपदेश देने से प्रजापति हैं ।।१२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तये नमः ।।१२५।। आप संसार और कर्मों से रहित होने से मुक्त हैं ।।१२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तये नमः ।।१२६।। आप में सामर्थ्य होने से अथवा अनन्त शक्ति होने से आप शक्त हैं ।।१२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः ।।१२७।। आप बाधा अथवा दुख से रहित होने से निराबाध हैं ।।१२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः ।।१२८।। आप शरीर रहित होने से निष्कल हैं ।।१२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः ।।१२९।। आप तीनों लोकों के स्वामी होने से भुवनेश्वर हैं ।।१२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः ।।१३०।। आप कर्मरूपी अंजन से रहित होने से निरंजन कहलाते हैं ।।१३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतये नमः ।।१३१।। जगत् को प्रकाशित करने से अथवा मोक्ष मार्ग का स्वरूप दिखलाने से आप जगज्योति हैं ।।१३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तये नमः ।।१३२।। आपके वचन पूर्वापर अविरुद्धहोने से प्रमाण हैं इसलिये आपको निरुक्तोक्ति कहते हैं ।।१३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय नमः ।।१३३।। आप रोग रहित अथवा खेद रहित होने से निरामय हैं ।।१३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थिताय नमः ।।१३४।। अनन्तकाल बीतने पर भी आपकी स्थिति अचल रहती है इसलिये आप अचल स्थिति कहलाते हैं ।। १३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः ।।१३५।। आप व्याकुलता रहित हैं अथवा आपकी शांति कभी भंग नहीं होती इसलिये आप अक्षोभ्य कहलाते हैं ।।१३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः ।।१३६।। आप सदा नित्य रहने से अथवा लोक शिखर पर विराजमान होने से कूटस्थ कहलाते हैं ।।१३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः ।।१३७।। आप गमनागमन से रहित होने से स्थाणु हैं ।।१३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः ।।१३८।। आप क्षय रहित होने अक्षय हैं ।।१३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रणीयेनमः ।।१३९।। तीनों लोकों में सबसे श्रेष्ठ होने के कारण आप अग्रणी कहलाते हैं ।।१३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामिण्ये नमः ।।१४०।। आप मोक्षपद को प्राप्त होने से ग्रामणी कहलाते हैं ।।१४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेत्राय नमः ।।१४१।। आप समस्त प्रजा को धर्मानुसार चलाते हैं इसलिये आप नेता हैं ।।१४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेताय नमः ।।१४२।। आप शास्त्र से उत्पन्न करने वाले अथवा धर्म अथवा धर्म व मोक्षमार्ग का उपदश देने वाले हैं इसलिये आप प्रणेता कहलाते हैं ।।१४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः ॥१४३॥ आप प्रमाण और नयों के स्वरूप को दिखाने वाले हैं अतः आप न्यायशास्त्रकृत कहलाते हैं ॥१४३॥

ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्राय नमः ॥१४४॥ आप सभी को हितरूप उपदेश देने से शास्ता हैं ॥१४४॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः ॥१४५॥ रत्नत्रय अथवा उत्तम क्षमादि धर्मों के स्वामी होने से आप धर्मपति हैं ॥१४५॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माय नमः ॥१४६॥ आप धर्मरूप होने से धर्म हैं ॥१४६॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्माय नमः ॥१४७॥ आप धर्मात्माओं की वृद्धि करने से धर्मात्मा हैं ॥१४७॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थंकृते नमः १४८॥ आप धर्मरूपी तीर्थ की प्रवृत्ति करने से धर्मतीर्थंकृत कहलाते हैं ॥१४८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः ॥१४९॥ आपकी ध्वजा पर बैल का चिन्ह होने से अथवा वृषभ अर्थात् धर्म की ध्वजा फहराने वाले आप वृषध्वज कहलाते हैं ॥१४९॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः ॥१५०॥ आप अहिंसा रूपी धर्म के स्वामी होने से वृषाधीश कहलाते हैं ॥१५०॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः ॥१५१॥ आप धर्म को प्रसिद्ध करने से वृषकेतु हैं ॥१५१॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः ॥१५२॥ आपने कर्मरूपी शत्रु को नाश करने के लिये धर्म रूपी शस्त्र को धारण कर रक्खा है इसलिये वृषायुध कहलाते हैं ॥१५२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः ॥१५३॥ आप धर्म की वृष्टि करने से वृष हैं ॥१५३॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः ॥१५४॥ आप धर्म के नायक होने से वृषपति हैं ॥ १५४॥

ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः ॥१५५॥ आप सबके स्वामी होने से भर्ता हैं ॥१५५॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय नमः ॥ १५६॥ आप वृषभ का चिह्न होने से वृषभांक हैं ॥१५६॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः ॥१५७॥ माता को स्वप्न में वृषभ दिखाई देकर आप उत्पन्न हुये हैं अथवा महान् पुण्य से उत्पन्न हुये हैं। इसलिये आप वृषभोद्भव कहलाते हैं ॥१५७॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये नमः ॥१५८॥ आप सुन्दर नाभि वाले होने से अथवा नाभिराजा की संतति होने से हिरण्यनाभि हैं ॥१५८॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः ॥१५९॥ आपका स्वरूप यथार्थ है, कभी नाश नहीं होता इसलिये आप भूतात्मा हैं ॥१५९॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते नमः ॥१६०॥ आप जीवों की रक्षा करने से अथवा कल्याण करने से भूतभृत कहलाते हैं ॥१६०॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः ॥१६१॥ आपकी भावना सदा मंगल रूप है इसलिये आप भूत-भावन कहलाते हैं ॥१६१॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः ॥१६२॥ आपका जन्म प्रशंसनीय है अथवा आपसे आपके वंश की वृद्धि हुई है इसलिये प्रभव कहे जाते हैं ॥१६२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः ॥१६३॥ संसार रहित होने से आप विभव हैं ॥१६३॥

ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः ॥१६४॥ केवलज्ञान रूपी कांति से प्रकाशमान होने से आप भास्वन् हैं ॥१६४॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः ॥१६५॥ आप में समय-समय में उत्पाद होता रहता है, इसलिये आप भव हैं ॥१६५॥

ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः ॥१६६॥ आप अपने स्वभाव में सदा लीन हैं इसलिये आप भाव हैं ॥१६६॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः ॥१६७॥ संसार भ्रमण का आप अंत करने वाले हैं, इसलिए भवान्तक को जाते हैं ॥१६७॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः ॥१६८॥ आपके गर्भावतार के समय सुवर्ण की वृष्टि हुई थी इसलिये आपको हिरण्यगर्भ कहते हैं ॥१६८॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भायनमः ॥१६९॥ आपके गर्भावतारके समयलक्ष्मी ने भी सेवा की थी अथवा आपके अंग-अंग में स्फुरायमान लक्ष्मी शोभायमान हैं, इसलिये आप को श्रीगर्भ कहते हैं ॥१६९॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवे नमः ॥१७०॥ अनन्त विभूति के स्वामी होने से आपको प्रभूत विभव कहते हैं ॥१७०॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः ॥१७१॥ आप जन्म रहित होने से अभव कहे जाते हैं ॥१७१॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभुवे नमः ॥१७२॥ आप अपने आप ही समर्थ होने से स्वयंप्रभु कहलाते हैं ॥१७२॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः ॥१७३॥ केवलज्ञान के द्वारा आपका आत्मा व्याप्त होने से आप प्रभूतात्मा कहलाते हैं ॥१७३॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे नमः ॥१७४॥ तीनों लोकों के स्वामी होने से आप जगतप्रभु कहलाते हैं ॥१७४॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः ॥१७५॥ समस्त जीवों के स्वामी होने से आप भूतनाथ हैं ॥१७५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः ॥१७६॥ सबसे प्रथम अर्थात् श्रेष्ठ होने से आप सर्वादि हैं ॥१७६॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः ॥१७७॥ आप समस्त लोकालोक को देख सकते हैं इसलिये सर्वदृक् हैं ॥१७७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाय नमः ॥१७८॥ आप हितोपदेश कर सभी का कल्याण करने से सर्व हैं ॥१७८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः ॥१७९॥ आप पूर्ण सम्यक्त्व को धारण करने से सर्वज्ञान हैं ॥१७९॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दर्शनाय नमः ॥१८०॥ आपका दर्शनपूर्ण अवस्था को प्राप्त हुआ है इसलिए आप सर्व दर्शन कहलाते हैं ॥१८०॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः ॥१८१॥ आप सबके प्रिय होने से सर्वात्मा हैं ॥१८१॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय नमः ॥१८२॥ आप तीनों लोकों के समस्त जीवों के स्वामी होने से सर्वलोकेश हैं ॥१८२॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः ॥१८३॥ आप समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से सर्वविद् हैं ॥१८३॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व लोकजिते नमः ॥१८४॥ आप अनन्तवीर्य होने के कारण समस्त लोक को जीतने वाले हैं इसलिए सर्वलोकजित कहलाते हैं ॥१८४॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः ॥१८५॥ आपकी पंचम मोक्षगति अतिशय सुन्दर होने से अथवा आपका ज्ञान प्रशंसनीय होने से आप सुगति कहलाते हैं ॥१८५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुतायनमः ॥१८६॥ आप अत्यन्त प्रसिद्ध होने से अथवा उत्तम शास्त्रज्ञान को धारण करने से आप सुश्रुत हैं ॥१८६॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः ॥१८७॥ आप भक्तों की प्रार्थना को अच्छी तरह से सुनते हैं इसलिए सुश्रुत कहलाते हैं ॥१८७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः ॥१८८॥ आपकी वाणी सप्तभंग स्वरूप होने अथवा हितोपदेश देने से आप सुवाक् कहलाते हैं ॥१८८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्ये नमः ॥१८९॥ आप सबके गुरु होने से सूरि है ॥१८९॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः ॥१९०॥ आप शास्त्रों के पारगामी होने से बहुश्रुत कहलाते हैं ॥१९०॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः ॥१९१॥ आप जगत् प्रसिद्ध होने से अथवा शास्त्रों से भी आपका यथार्थ स्वरूप जाना नहीं जाता इसलिये आप विश्रुत हैं ॥१९१॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतः पादाय नमः १९२॥ आपकी केवलज्ञान रूपी किरणें सब ओर फैली हुई हैं इसलिये आपको विश्वतः पाद कहते हैं ॥१९२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय नमः ॥१९३॥ लोक के शिखर पर विराजमान होने से आप विश्व-शीर्ष हैं ॥१९३॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवाय नमः ॥१९४॥ आपका ज्ञान अत्यन्त निर्दोष है इसलिये आपको शुचि-श्रवा कहते हैं ॥१९४॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षाय नमः ॥१९५॥ अनन्त सुखी होने से आप सहस्रशीर्ष हैं ॥१९५॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय नमः ॥१९६॥ आत्मा के स्वरूप को जानने से अथवा लोकालोक को जानने से आप क्षत्रज्ञ हैं ॥१९६॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षाय नमः ॥१९७॥ आप अनन्तदर्शी होने से सहस्राक्ष हैं ॥१९७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपदे नमः ॥१९८॥ अनन्त वीर्य को धारण करने से आप सहस्रपाद् हैं ॥१९८॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः ॥१९९॥ भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों के स्वामी होने से आप भूतभव्यभवद्भर्ता हैं ॥१९९॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः ॥२००॥ आप समस्त विद्याओं के तथा केवलज्ञान के स्वामी होने से विश्वविद्यामहेश्वर कहे जाते हैं ॥२००॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः ॥२०१॥ सद्गुणों के पूर्ण होने से अथवा आपके प्रदेशों में समस्त जीवों के अवकाश देने की शक्ति होने से आपको स्थविष्ठ कहते हैं ॥२०१॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः ॥२०२॥ आप आदि, अन्त रहित होने से अत्यन्त वृद्ध हैं अथवा ज्ञान से वृद्ध हैं इसलिए स्थविर कहलाते हैं ॥२०२॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः ॥२०३॥ मुख्य होने से आप ज्येष्ठ हैं ॥२०३॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय नमः ॥२०४॥ सबके अग्रगण्य होने से आप पृष्ठ हैं ॥२०४॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः ॥२०५॥ अत्यन्त प्रिय होने से आप प्रेष्ठ हैं ॥२०५॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः ॥२०६॥ अतिशय बुद्धि को धारण करने वाले होने से आप वरिष्ठधी कहलाते हैं ॥२०६॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः ॥२०७॥ आप अत्यन्त स्थिर अर्थात् अविनाशी होने से स्थेष्ठ कह-लाते हैं ॥२०७॥

ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः ॥२०८॥ अत्यन्त गुरु होने आप गरिष्ठ हैं ॥२०८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वहिष्ठाय नमः ॥२०९॥ अनन्त गुणों के धारक होने तथा अनेक स्वरूप हो जाने से आप वहिष्ठ हैं ॥२०९॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः ॥२१०॥ प्रशंसनीय होने से आप श्रेष्ठ हैं ॥२१०॥

ॐ ॐ अर्हं अनिष्ठाय नमः ॥२११॥ अतिशय सूक्ष्म अर्थात् केवलज्ञान गोचर होने से आप अनिष्ठ कहलाते हैं ॥२११॥

ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः ॥२१२॥ आपकी वाणी पूज्य होने से आप गरिष्ठगी कहलाते हैं ॥२१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभृदाय नमः ॥२१३॥ चतुर्गतिरूप संसार को नष्ट करने के कारण आप विश्वभृद कहलाते हैं ॥२१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वश्रषे नमः ॥२१४॥ विधि विधान के कर्त्ता होने से आप विश्वसृट् हैं ॥२१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वाय नमः ॥२१५॥ तीन लोक के स्वामी होने से आप विश्वेट् कहलाते हैं ॥२१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुके नमः ॥२१६॥ जगत् की रक्षा करने वाले होने से आप विश्वभुक् कहलाते हैं ॥२१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः ॥२१७॥ सबके स्वामी होने से आप विश्वनायक हैं ॥२१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिने नमः ॥२१८॥ समस्त प्राणियों के विश्वास योग्य होने से अथवा केवल-ज्ञान के कारण सब जगह निवास करने से आप विश्वासी कहलाते हैं ॥२१८॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः ॥२१९॥ आपका आत्मा अनन्त स्वरूप है, इसलिए आप विश्वरूपात्मक कहलाते हैं ॥२१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः ॥२२०॥ संसार को जीतने से आप विश्वजित कहलाते हैं ॥२२०॥

ॐ ह्रीं अर्हं विजितान्तकाय नमः ॥२२१॥ काल को जीतने के कारण आप विजितान्तक कहलाते हैं ॥२२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः ॥२२२॥ आपको किसी प्रकार का मनो विकार नहीं है इसलिए आप विभव कहलाते हैं ॥२२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः ॥२२३॥ भय रहित होने से आप विभय कहलाते हैं ॥२२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः ॥२२४॥ लक्ष्मी के स्वामी होने से तथा अतिशय बलवान् होने से आपको वीर कहते हैं ॥२२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः ॥२२५॥ शोक रहित होने से आप विशोक कहलाते हैं ॥२२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः ॥२२६॥ जरा रहित होने से आप विजर हैं ॥२२६॥

ॐ ह्रीं अर्हं जरणाय नमः ॥२२७॥ नवीन न होने से अर्थात् अनादि कालीन होने से आप जरन या वृद्ध हैं ॥२२७॥

ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः ॥२२८॥ राग रहित होने से आप विराग हैं ॥२२८॥

ॐ ह्रीं अर्हं विताय नमः ॥२२९॥ समस्त विषयों से विरक्त होने से आपको विरत कहते हैं ॥२२९॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः ॥२३०॥ पर वस्तु का सम्बन्ध न रखने से आप असंग हैं ॥२३०॥

ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः ।। २३१ ।। आप एकाकी अथवा पवित्र होने से विविक्त हैं ।।२३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः ।। २३२ ।। ईर्षा द्वेष न करने से आप वीतमत्सर कहलाते हैं ।। २३२ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनेयजनताबंधवे नमः ।। २३३ ।। आप अपने भक्तजनों के बंधु हैं इसलिए आप विनेयजनता बंधु कहलाते हैं ।। २३३ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेषकल्मषाय नमः ।। २३४ ।। कर्मरूपी समस्त कालिमा रहित होने से आप विलीनाशेषकल्मष हैं ।। २३४ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः ।। २३५ ।। अन्य किसी वस्तु के साथ सम्बन्ध न होने से अथवा राग रहित होने से आप वियोग हैं ।। २३५ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः ।। २३६ ।। योग के जानकार होने से आप योगवित् हैं ।। २३६ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्वानाय नमः ।।२३७।। महापंडित अर्थात् पूर्ण ज्ञानी होने से आप विद्वान हैं ।।२३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं विधाताय नमः ।।२३८।। धर्मरूप सृष्टि के कर्त्ता होने से अथवा सबके गुरु होने से आप विधाता हैं ।।२३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः ।।२३९।। आपके अनुष्ठान एवं क्रिया अत्यन्त प्रशंसनीय होने से आप सुविधि हैं ।।२३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुध्ये नमः ।।२४०।। अतिशय बुद्धिमान होने से आप सुधी हैं ।।२४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षांतिभाजे नमः ।।२४१।। आप उत्तम शांति के धारण से क्षांतिभाक् हैं ।।२४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वी मूर्तये नमः ।।२४२।। आप में पृथ्वी के समान सबको सहन करने की शक्ति होने से पृथ्वी मूर्ति हैं ।।२४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिभाजे नमः ।।२४३।। आप शान्ति को धारण करने से शांतिभाक् कहलाते हैं ।।२४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय नमः ।।२४४।। जल के समान अत्यन्त निर्मल होने से तथा अन्य जीवों को कर्ममल रहित शुद्ध करने से आप सलिलात्मक हैं ।।२४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः ।।२४५।। आप वायु के समान पर के सम्बन्ध में रहित होने के कारण वायुमूर्ति हैं ।।२४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः ।।२४६।। परिग्रह रहित होने से आप असंगात्मा हैं ।।२४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं वह्नि मूर्तये नमः ।।२४७।। अग्नि के समान ऊर्ध्वगमन स्वभाव होने से अथवा कर्म-रूपी ईन्धन को जला देने से आप वह्निमूर्ति हैं ।।२४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधृजे नमः ।।२४८।। अधर्म का नाश करने से आप अधर्मधृक् कहलाते हैं ।।२४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः ।।२४९।। कर्मरूपी सामग्री का हवन करने से आप सुयज्वा हैं ।।२४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः ।।२५०।। स्वभाव भाव की आराधना करने से अथवा भाव पूजा के कर्त्ता होने से आप यजमानात्मा हैं ।।२५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वाय नमः ।।२५१।। परमानन्दसागर में अभिषेक करने से आप सुत्वा कहलाते हैं ।।२५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुत्रामपूजिताय नमः ॥२५२॥ इन्द्र के द्वारा पूज्य होने से आप सुत्राम पूजित हैं ॥२५२॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः ॥२५३॥ ध्यान रूपी अग्नि में शुभाशुभ कर्मों को भस्म करने में अथवा ज्ञानरूप यज्ञ करने से आप आचार्य कहलाते हैं। इसलिए आपको ऋत्विक् कहते हैं ॥२५३॥

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः ॥२५४॥ यज्ञ के मुख्य अधिकारी होने से आप यज्ञपति हैं ॥२५४॥

ॐ ह्रीं अर्हं यज्याय नमः ॥२५५॥ सर्व पूज्य होने से आप यज्य हैं ॥२५५॥

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः ॥२५६॥ यज्ञ के साधन अर्थात् मुख्य कारण होने से आप यज्ञांग हैं ॥२५६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः ॥२५७॥ मरण रहित होने से अथवा संसार तृष्णा को निवारण करने से आप अमृत हैं ॥२५७॥

ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः ॥२५८॥ अपने आत्मा में तल्लीन रहने से आप हविष कहलाते हैं ॥२५८॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः ॥२५९॥ आप आकाश के समान निर्मल अथवा केवलज्ञान के द्वारा सर्वव्यापी होने से व्योममूर्ति हैं ॥२५९॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः ॥२६०॥ रूप, रस, गंध, स्पर्श, रहित होने से आप अमूर्तात्मा हैं ॥२६०॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः ॥२६१॥ कर्मरूपी लेप से रहित होने से आप निर्लेप हैं ॥२६१॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः ॥२६२॥ रागादि रहित होने से अथवा मलमूत्रादि से रहित होने से आप निर्मल हैं ॥२६२॥

ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः ॥२६३॥ आप सर्वदा स्थित रहने से अचल हैं ॥२६३॥

ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः ॥२६४॥ चन्द्रमा के समान प्रकाशमान और शांति होने से अथवा अत्यन्त सुशोभित होने से आप सोममूर्ति हैं ॥२६४॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः ॥२६५॥ आप अतिशय सौम्य होने से सुसौम्यात्मा हैं ॥२६५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः ॥२६६॥ आप सूर्य के समान अतिशय कांतियुक्त होने से सूर्यमूर्ति हैं ॥२६६॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः ॥२६७॥ आप अतिशय प्रभावशाली होने से अथवा केवलज्ञान रूपी तेज से सुशोभित होने से महाप्रभ हैं ॥२६७॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रविदे नमः ॥२६८॥ आप मंत्र के जानने वाले होने से मंत्रविद् हैं ॥२६८॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रकृते नमः ॥२६९॥ प्रथमानुयोग आदि चारों अनुयोग रूप मन्त्रों के अथवा जप करने योग्य मन्त्रों के कर्त्ता होने से आप मन्त्रकृत् हैं ॥२६९॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रिणे नमः ॥२७०॥ आत्मा का विचार करने से अथवा लोक की रक्षा करने अथवा मुख्य होने से आप मन्त्री हैं ॥२७०॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रमूर्तये नमः ॥२७१॥ मंत्रस्वरूप होने से आप मन्त्रमूर्ति हैं ॥२७१॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगाय नमः ॥२७२॥ अनन्त ज्ञानी होने से आप अनंतगा हैं ॥२७२॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वतंत्राय नमः ॥२७३॥ स्वाधीन होने से अथवा आत्मा ही आपका सिद्धान्त होने से आप स्वतन्त्र हैं ॥२७३॥

ॐ ह्रीं अर्हं तंत्र कृते नमः ।।२७४।। आगम के मुख्य कर्त्ता होने से आप तन्त्रकृत हैं ।।२७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वांताय नमः ।।२७५।। शुद्ध अंतःकरण होने से आप स्वांत हैं ।।२७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतांताय नमः ।।२७६।। यम अर्थात् मरण को नाश करने से आप कृतांत कहलाते हैं ।।२७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतांतकृते नमः ।।२७७।। यम अर्थात् मरण को नाश करने से और पुण्य की वृद्धि के कारण होने से आप कृतांतकृत हैं ।।२७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतये नमः ।।२७८।। प्रवीण अथवा अतिशय पुण्यवान् तथा हरिहरादि द्वारा पूज्य होने से आप कृती हैं ।।२७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः ।।२७९।। मोक्ष रूप परम पुरुषार्थ को सिद्ध करने से आप कृतार्थ हैं ।।२७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः ।।२८०।। आप का कृत्य अतिशय प्रशंसनीय होने से आप सत्कृत्य हैं ।।२८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः ।।२८१।। करने योग्य समस्त कार्य करने से अथवा समस्त कार्य सफल होने से आप कृतकृत्य हैं ।।२८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रतवे नमः ।।२८२।। ध्यान रूपी अग्नि में कर्म, नो कर्म आदि को भस्म करने से अथवा ज्ञान रूपी यज्ञ करने से अथवा तपश्चर्या रूपी यज्ञ समाप्त होने से आप कृतक्रतु हैं ।।२८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः ।।२८३।। अविनाशी होने से अर्थात् सदा वर्तमान रहने से आप नित्य हैं ।।२८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः ।।२८४।। मृत्यु को जीतने से आप मृत्युन्जय हैं ।।२८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतये नमः ।।२८५।। आपका आत्मा कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता इसलिए आप अमृत्यु हैं ।।२८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः ।।२८६।। मरण रहित होने से अथवा अमृतस्वरूप शांतिदायक होने से आप अमृतात्मा हैं ।।२८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः ।।२८७।। जन्म मरण से रहित होने के कारण अथवा अनिश्वर अवस्था को प्राप्त होने से अथवा भव्य जीवों के लिये मोक्ष प्राप्ति का कारण होने से आप अमृतोद्भव हैं ।।२८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः ।।२८८।। शुद्ध आत्मा में तल्लीन रहने से आप ब्रह्मनिष्ठ कहलाते हैं ।।२८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे नमः ।।२८९।। सबसे उत्कृष्ट अथवा केवलज्ञान को धारण करने से आप परब्रह्म हैं ।।२८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः ।।२९०।। ज्ञान स्वरूप होने से आप ब्रह्मात्मा हैं ।।२९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसंभवनाय नमः ।।२९१।। आप से ज्ञान की उत्पत्ति होती है अथवा शुद्धात्मा की प्राप्ति होती है इसलिए आप ब्रह्मसंभव हैं ।।२९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः ।।२९२।। गणधरादि बड़े ज्ञानियों के स्वामी होने से आप महाब्रह्मपति हैं ।।२९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेशाय नमः ॥२९३॥ केवली भी आपकी स्तुति करते हैं अथवा केवलज्ञान के स्वामी हैं इसलिए ब्रह्मेश हैं ॥२९३॥

ॐ ह्रीं अर्हं महा ब्रह्मपदेश्वराय नमः ॥२९४॥ आपमोक्ष के स्वामी अथवा समवशरण के स्वामी होने से महाब्रह्मपदेश्वर हैं ॥२९४॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः ॥२९५॥ आप भक्तों को स्वर्ग मोक्ष देने से अथवा सदा आनन्द-स्वरूप होने से सुप्रसन्न हैं ॥२९५॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्माय नमः ॥२९६॥ आप मल रहित होने से प्रसन्नात्मा हैं ॥२९६॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः ॥२९७॥ आप केवलज्ञान दया धर्म और इन्द्रिय निग्रहरूप तपश्चरण के स्वामी होने से ज्ञान धर्मदमप्रभु कहलाते हैं ॥२९७॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः ॥२९८॥ क्रोधादि रहित होने से आप प्रशमात्मा हैं ॥२९८॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतात्मने नमः ॥२९९॥ आप परम शांतरूप होने से प्रशांतात्मा हैं ॥२९९॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषोत्तमाय नमः ॥३००॥ अनादि काल से मोक्षस्थान में निवास करने से अथवा अनादि काल से सदा होने वाले तिरेसठ शलाका पुरुषों में उत्कृष्ट होने से आप पुराण पुरुषोत्तम कहलाते हैं ॥३००॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय नमः ॥३०१॥ अशोक प्रतीक वृक्ष ही आपका चिह्न है इसलिए आपको महाशोकध्वज कहते हैं ॥३०१॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः ॥३०२॥ आप शोक रहित होने से अशोक हैं ॥३०२॥

ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः ॥३०३॥ सबके पितामह होने से अथवा सबको सुख देने से आपको 'क' कहते हैं ॥३०३॥

ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टाय नमः ॥३०४॥ भक्त लोगों को स्वर्ग, मोक्ष, देने से आप सृष्टा हैं ॥३०४॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमविष्टराय नमः ॥३०५॥ आपका आसन कमल है अथवा कमल ही आपका सिंहासन है इसलिए आपको पद्मविष्टर कहते हैं ॥३०५॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः ॥३०६॥ लक्ष्मी के स्वामी होने से आप पद्मेश हैं ॥३०६॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्म संभूतये नमः ॥३०७॥ विहार करते समय इन्द्र लोग आपके चरण कमलों के नीचे कमलों की रचना करते हैं इसलिए आप पद्म संभूति कहे जाते हैं ॥३०७॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः ॥३०८॥ कमल के समान सुन्दर नाभि होने से पद्मनाभि कहे जाते हैं ॥३०८॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः ॥३०९॥ आप से श्रेष्ठ अन्य कोई नहीं है अतएव आप अनुत्तर कहलाते हैं ॥३०९॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः ॥३१०॥ लक्ष्मी के उत्पन्न होने का स्थान होने से आप पद्मयोनि हैं ॥३१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः ॥३११॥ धर्म रूप जगत की उत्पत्ति होने के कारण से आप जगद्योनि हैं ॥३११॥

ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः ॥३१२॥ ज्ञान गम्य होने से आप इत्य हैं ॥३१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः ॥३१३॥ सबके द्वारा स्तुति करने योग्य होने से आप स्तुत्य हैं ॥३१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः ।।३१४।। समस्त स्तुतियों के ईश्वर होने से आप स्तुतीश्वर हैं ।।३१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः ।।३१५।। स्तुतियों के पात्र होने से आप स्तवनार्ह हैं ।।३१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः ।।३१६।। इन्द्रियों को वश में करने से आप हृषीकेश हैं ।।३१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः ।।३१७।। काम, क्रोध, रोग आदि को जीत लेने से जितजेय हैं ।।३१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः ।।३१८।। आपने शुद्ध आत्मा के प्राप्ति के कृत्य पूर्ण किये हैं, इसलिए आप कृतक्रिय हैं ।।३१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः ।।३१९।। बारह प्रकार की सभाओं के स्वामी होने से आप गणाधिप हैं ।।३१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः ।।३२०।। समस्त संघ के मुख्य होने से आप गण ज्येष्ठ हैं ।।३२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः ।।३२१।। अनन्त गुणों के स्वामी होने से आप गण्य हैं ।।३२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः ।।३२२।। पवित्र होने से आप पुण्य हैं ।।३२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्ये नमः ।।३२३।। सब के अग्रेसर होने से गणाग्रणी हैं ।।३२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः ।।३२४।। गुणों की खान होने से गुणाकर हैं ।।३२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणांबोधये नमः ।।३२५।। गुणों के समुद्र होने से गुणांबोधि हैं ।।३२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः ।।३२६।। गुणों को जानने से गुणज्ञ हैं ।।३२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः ।।३२७।। समस्त गुणों के नायक होने से गुणनायक हैं ।।३२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरये नमः ।।३२८।। गुणों का आदर करने से गुणादरी हैं ।।३२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदये नमः ।।३२९।। क्रोधादि वैभाविक गुणों का नाश करने से अथवा इन्द्रियों का नाश करने से गुणोच्छेदी हैं ।।३२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः ।।३३०।। केवलज्ञानादि गुण निश्चित रूप होने से अथवा वैभाविक गुणों का नाश करने से अथवा गुण अर्थात् तन्तु वा वस्त्र रहित होने से निर्गुण हैं ।।३३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः ।।३३१।। आपकी वाणी पवित्र है इसलिए पुण्यगी हैं ।।३३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः ।।३३२।। शुद्ध गुण स्वरूप होने से गुण हैं ।।३३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः ।।३३३।। सब के शरण भूत होने से शरण्य हैं ।।३३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः ।।३३४।। पुण्य रूप वचन होने से पुण्यवाक् हैं ।।३३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः ।।३३५।। पवित्र होने से पूत हैं ।।३३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः ।।३३६।। सब में श्रेष्ठ होने से अथवा जीवों को अपना सा मुक्त स्वरूप करने से वरेण्य हैं ।।३३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः ।।३३७।। पुण्य के स्वामी होने से पुण्य नायक हैं ।।३३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः ।।३३८।। आपका परिमाण नहीं किया जा सकता अथवा आपके गुण नहीं गिने जा सकते इसलिए अगण्य हैं ।।३३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः ।।३३९।। पवित्र ज्ञान होने से पुण्यधी हैं ।।३३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः ॥३४०॥ सर्व कल्याण करने से अथवा समवशरण के योग्य होने से गण्य हैं ॥३४०॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः ॥३४१॥ पुण्य का कर्ता होने से पुण्य कृत हैं ॥३४१॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य शासनाय नमः ॥३४२॥ आपका मार्ग पुण्य रूप होने से आप पुण्य शासन हैं ॥३४२॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय नमः ॥३४३॥ धर्म का बगीचा रूप (समूह) होने से आप धर्माराम हैं ॥३४३॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः ॥३४४॥ गुणों के समूह होने से गुणग्राम हैं ॥३४४॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः ॥३४५॥ पुण्य और पाप दोनों का नाश करने से आप पुण्यापुण्य निरोधक कहे जाते हैं ॥३४५॥

ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः ॥३४६॥ हिंसादि समस्त पापों से रहित होने से पापापेत कहे जाते हैं ॥३४६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपापात्मने नमः ॥३४७॥ पाप रहित होने से विपात्मा कहे जाते हैं ॥३४७॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपात्माय नमः ॥३४८॥ पाप कर्म नष्ट होने से विपात्मा कहे जाते हैं ॥३४८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः ॥३४९॥ कर्म मल रहित होने से वीतकल्मष हैं ॥३४९॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः ॥३५०॥ परिग्रह रहित होने से निर्द्वन्द्व हैं ॥३५०॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः ॥३५१॥ अहंकार के न होने से निर्मद हैं ॥३५१॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांताय नमः ॥३५२॥ उपाधि रहित होने से शांत हैं ॥३५२॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः ॥३५३॥ मोह रहित होने से निर्मोह हैं ॥३५३॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः ॥३५४॥ उपद्रव रहित होने से निरुपद्रव हैं ॥३५४॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः ॥३५५॥ आपके नेत्र के पलक दूसरे पलक से नहीं लगते हैं इसलिये आप निर्निमेषा हैं ॥३५५॥

ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः ॥३५६॥ कवलाहार न करने से निराहार हैं ॥३५६॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः ॥३५७॥ क्रिया रहित होने से निष्क्रिय हैं ॥३५७॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः ॥३५८॥ सब प्रकार के संकट रहित होने से निरुपप्लव हैं ॥३५८॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः ॥३५९॥ सब प्रकार के कलंक रहित होने से निष्कलंक हैं ॥३५९॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनाय नमः ॥ ३६०॥ पापों के दूर करने से निरस्तैन हैं ॥३६०॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्धुतांगाय नमः ॥३६१॥ अपराधों का नाश करने से निर्धुतांग हैं ॥३६१॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय नमः ॥३६२॥ आस्रव रहित होने से निरास्रव हैं ॥३६२॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः ॥३६३॥ अतिशयविशाल होने से विशाल हैं ॥३६३॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतये नमः ॥३६४॥ केवलज्ञान रूप अपार ज्योति को धारण करने से विपुल ज्योति हैं ॥३६४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः ॥३६५॥ आपके समान अन्य कोई न होने से अतुल हैं ॥३६५॥

ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्य वैभवाय नमः ॥३६६॥ आपकी विभूति का कोई चिंतन भी नहीं कर सकता इसलिए आप अचिंत्य वैभव हैं ॥३६६॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृताय नमः ॥३६७॥ संवर रूप होने से अथवा गणधरादि से वेष्ठित रहने से सुसंवृत हैं ॥३६७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः। ३६८॥ आपका आत्मा गुप्त होने से अथवा आस्रवादि से अलग होने से आप सुगुप्तात्मा हैं ॥३६८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुभृताय नमः ॥३६९॥ आप उत्तम ज्ञाता होने से सुभृत हैं ॥३६९॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्वविदे नमः ॥३७०॥ आप नगगम, संग्रह आदि नयों का मर्म जानते हैं इसलिये सुनयतत्वविद् कहलाते हैं ॥३७०॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकविधाय नमः ॥३७१॥ एक केवलज्ञान अथवा एक आध्यात्मविद्या धारण करने से आप एकविध हैं ॥३७१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः ॥३७२॥ आप अनेक विद्याओं को जानने के कारण महाविद्य हैं ॥३७२॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः ॥३७३॥ आप प्रत्यक्ष ज्ञानी होने से मुनि हैं ॥३७३॥

ॐ ह्रीं अर्हं परिवृद्धाय नमः ॥३७४॥ तपस्वियों के स्वामी होने से आप परिवृद्ध हैं ॥३७४॥

ॐ ह्रीं अर्हं पतये नमः ॥३७५॥ जगत् की रक्षा करने से अथवा दुख दूर करने से आप पति हैं ॥३७५॥

ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः ॥३७६॥ आप बुद्धि के स्वामी होने से धीश हैं ॥३७६॥

ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये नमः ॥३७७॥ आप ज्ञान के सागर होने से विद्या निधि हैं ॥३७७॥

ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः ॥३७८॥ तीनों लोकों को प्रत्यक्ष जानने से आप साक्षी हैं ॥३७८॥

ॐ ह्रीं अर्हं विनेताय नमः ॥३७९॥ मोक्षमार्ग को प्रगट करने से आप विनेता हैं ॥३७९॥

ॐ ह्रीं अर्हं विहितांतकाय नमः ॥३८०॥ यम का नाश करने से आप विहितांतक कहलाते हैं ॥३८०॥

ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः ॥३८१॥ नरकादि गतियों से रक्षा करने के कारण आप पिता हैं ॥३८१॥

ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय नमः ॥३८२॥ आप सबके गुरु होने से पितामह हैं ॥३८२॥

ॐ ह्रीं अर्हं पातुवे नमः ॥३८३॥ सबकी रक्षा करने से आप पातु हैं ॥३८३॥

ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः ॥३८४॥ भक्ति को पवित्र करने से आप पवित्र हैं ॥३८४॥

ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः ॥३८५॥ सबको शुद्ध करने से आप पावन हैं ॥३८५॥

ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः ॥३८६॥ ज्ञानस्वरूप होने से आप गति हैं ॥३८६॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्राताय नमः ॥३८७॥ सबकी रक्षा करने से आप त्राता हैं ॥३८७॥

ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः ॥३८८॥ नाम लेने मात्र से ही समस्त रोगों को अथवा जन्म, जरा, मरणादि रोगों को दूर करने से आप भिषग् अथवा उत्तम वैद्य हैं ॥३८८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः ॥३८९॥ आप सबसे श्रेष्ठ होने से वर्य हैं ॥३८९॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः ॥३९०॥ स्वर्ग, मोक्षादि को देने के कारण आप वरद हैं ॥३९०॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः ॥३९१॥ भक्तों की इच्छा पूर्ण करने से आप परम हैं ॥३९१॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुंसे नमः ॥३९२॥ अपने आत्मा तथा भक्तों को पवित्र करने के कारण आप पुमान हैं ॥३९२॥

ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः ॥३९३॥ धर्म, अधर्म, का निरूपण करने से आप कवि हैं ॥३९३॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषाय नमः ॥३९४॥ अनादि कालीन होने से आप पुराण पुरुष हैं ॥३९४॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयानाय नमः ॥३९५॥ आप अतिशय वृद्ध होने से वर्षीयान हैं ॥३९५॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः ॥३९६॥ ज्ञानी होने से आप वृषभ हैं ॥३९६॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुवे नमः ॥३९७॥ सबसे अग्रगण्य होने से आप पुरु हैं ॥३९७॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा प्रसवाय नमः ॥३९८॥ आपसे स्थैर्य गुण की उत्पत्ति हुई है अथवा आप की सेवा करने से यह जीव जगत मान्य हो जाता है इसलिये आप प्रतिष्ठा प्रसव कहलाते हैं ॥३९८॥

ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः ॥३९९॥ मोक्ष के साक्षात्कार होने से अथवा सभी को जानने से आप हेतु हैं ॥३९९॥

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैक पितामहाय नमः ॥४००॥ आप तीनों लोकों के जीवों की रक्षा करने अथवा उपदेश देने से भुवनैक पितामह हैं ॥४००॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः ॥४०१॥ श्रीवृक्ष का चिन्ह होने से आप श्रीवृक्ष कहलाते हैं ॥४०१॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्लेक्षणाय नमः ॥४०२॥ सूक्ष्म होने से अथवा लक्ष्मी के द्वारा आलिंगन करने स आप श्लक्षण हैं ॥४०२॥

ॐ ह्रीं अर्हं लक्षणाय नमः ॥४०३॥ लक्षण सहित होने से आप लक्षण्य हैं ॥४०३॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः ॥४०४॥ अनेक शुभलक्षणों से सम्पन्न होने के कारण शुभलक्षण हैं ॥४०४॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः ॥४०५॥ इन्द्रिय रहित होने से आप निरक्ष हैं ॥४०५॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षाय नमः ॥४०६॥ कमल के समान नेत्र होने से आप पुण्डरीकाक्ष हैं ॥४०६॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः ॥४०७॥ केवलज्ञान से वृद्धिगत होने से आप पुष्कल हैं ॥४०७॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः ॥४०८॥ आप कमलदल के समान दीर्घ नेत्र होने से पुष्करेक्षण हैं ॥४०८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः ॥४०९॥ मोक्षरूप सिद्धि को देने से आप सिद्धिदा हैं ॥४०९॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः ॥४१०॥ समस्त मनोरथ सफल होने से आप सिद्धसंकल्प हैं ॥४१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः ॥४११॥ आप पूर्णानन्दस्वरूप होने से सिद्धात्मा हैं ॥४११॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिसाधनाय नमः ॥४१२॥ मोक्षमार्ग रूप साधन भूत होने से आप सिद्धि साधन हैं ॥४१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय नमः ॥४१३॥ सम्यग्दृष्टियों अथवा विशेष ज्ञानियों के द्वारा जानने योग्य होने से आप बुद्धबोध्य हैं ॥४१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधाय नमः ॥४१४॥ आपका रत्नत्रय अति प्रशंसनीय होने से आप महाबोधि हैं ॥४१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धमानाय नमः ॥४१५॥ आपका पूज्यपना अतिशय बड़ा हुआ होने से आप वर्द्धमान हैं ॥४१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकाय नमः ॥४१६॥ अति अधिक विभूति को धारण करने से महार्द्धिक हैं ॥४१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः ॥४१७॥ प्रथमानुयोग आदि चारों वेदों के कारण होने से अथवा ज्ञान स्वरूप होने से आप वेदांग हैं ॥४१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः ॥४१८॥ चारों अनुयोगों के जानने से अथवा आत्मा का स्वरूप जानने से आप वेदविद् हैं ॥४१८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः ॥४१९॥ आगम के द्वारा जानने योग्य होने के कारण आप वेद्य हैं ॥४१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः ॥४२०॥ उत्पन्न होने के समान ही आपका स्वरूप है अथवा आप रूप रहित हैं इसलिये आप जात रूप हैं ॥४२०॥

ॐ ह्रीं अर्हं विदांबराय नमः ॥४२१॥ आप विद्वानों में श्रेष्ठ होने से बिदाम्बर हैं ॥४२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः ॥४२२॥ केवलज्ञान के द्वारा अथवा आगम के द्वारा जानने योग्य होने से आप वेदवेद्य हैं ॥४२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः ॥४२३॥ अनुभव गम्य होने से आप स्वसंवेद्य हैं ॥४२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः ॥४२४॥ आप विलक्षण ज्ञानी होने से अथवा आगम के अगोचर होने से विवेद हैं ॥४२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं वदतांबराय नमः ॥४२५॥ वक्ताओं में श्रेष्ठ अथवा उत्तम होने से आप वदतांबर हैं ॥४२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय नमः ॥४२६॥ आदि, अंत रहित होने से आप अनादि निधन हैं ॥४२६॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः ॥४२७॥ ज्ञान के द्वारा स्पष्ट प्रतिभासित होने से आप व्यक्त हैं ॥४२७॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचये नमः ॥४२८॥ आपके वचन समस्त प्राणियों के समझने योग्य हैं इसलिये आप व्यक्तवाक् हैं ॥४२८॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्त शासनाय नमः ॥४२९॥ आपकी आज्ञा अथवा मत समस्त संसार में प्रसिद्ध होने से अथवा आपके कहे हुये शास्त्रों में पूर्वापर विरोध न होने से आप व्यक्त शासन हैं ॥४२९॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः ॥४३०॥ आप युग की आदि अर्थात् कर्म भूमि के कर्ता हैं, इसलिये युगादिकृत हैं ॥४३०॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः ॥४३१॥ आप युगों का आधार होने से युगाधार हैं ॥४३१॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः ॥४३२॥ युग के आरम्भ में होने से आप युगादि हैं ॥४३२॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः ॥४३३॥ जगत् के आदि में अर्थात् कर्मभूमि के आदि में उत्पन्न होने से आप जगदादिज हैं ॥४३३॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः ॥४३४॥ इन्द्र, नरेन्द्र, आदि सबके विशेष स्वामी होने से आप अतीन्द्र हैं ॥४३४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियाय नमः ॥४३५॥ इन्द्रिय गोचर न होने से आप अतींद्रिय हैं ॥४३५॥

ॐ ह्रीं अर्हं धींद्राय नमः ॥४३६॥ ज्ञान होने से अथवा शुक्लध्यान के द्वारा परमात्मस्वरूप होने से धींद्र हैं ॥४३६॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेंद्राय नमः ।।४३७।। पूजा के अधिपति होने से अथवा इन्द्र से भी अधिक संपत्तिवान् होने से आप महेन्द्र हैं ।।४३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियार्थदृशे नमः ।।४३८।। इन्द्रिय और मन के अगोचर पदार्थों को भी जानने से आप अतींद्रियार्थदृक हैं ।।४३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनींद्रियाय नमः ।।४३९।। इन्द्रिय रहित होने से आप अनिंद्रिय हैं ।।४३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहमिंद्राचार्याय नमः ।।४४०।। आप अहमिन्द्रों के द्वारा पूज्य होने से अहमिंद्राचार्य हैं ।।४४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रमहिताय नमः ।।४४१।। समस्त बड़े-बड़े इन्द्रों के द्वारा पूज्य होने से आप महेन्द्रमहित हैं ।।४४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः ।।४४२।। आप सबसे पूज्य व बड़े होने से महान् हैं ।।४४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः ।।४४३।। जन्म, मरण रहित होने से अथवा सर्वोत्कृष्ट होने से आप उद्भव हैं ।।४४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः ।।४४४।। मोक्ष के कारण होने से आप कारण हैं ।।४४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृते नमः ।।४४५।। शुद्ध भावों के कर्त्ता होने से आप कर्त्ता हैं ।।४४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः ।।४४६।। संसार समुद्र के परागामी होने से आप पारग हैं ।।४४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय नमः ।।४४७।। भव्य जीवों को संसार समुद्र से पार कर देने से आप भवतारक हैं ।।४४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्याय नमः ।।४४८।। किसी के भी द्वारा अवगाहन न करने से आप अगाह्य हैं ।।४४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः ।।४४९।। आपका स्वरूप हर एक कोई नहीं कह सकता और न जान सकता है इसलिए गहन हैं ।।४४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः ।।४५०।। परम रहस्यरूप अर्थात् गुप्त रूप होने से आप गुह्य हैं ।।४५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं परार्घ्याय नमः ।।४५१।। आप उत्कृष्ट विभूति के स्वामी होने से परार्घ्य हैं ।।४५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः ।।४५२।। सबके स्वामी होने से अथवा मोक्षलक्ष्मी के स्वामी होने से आप परमेश्वर हैं ।।४५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतर्द्धये नमः ।।४५३।। आप अनन्त ऋद्धियों के धारण करने से अनंतर्द्धि हैं ।।४५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये नमः ।।४५४।। आप अपरिमित ऐश्वर्य को धारण करने से अमेयर्द्धि हैं ।।४५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्यर्द्धये नमः ।।४५५।। आपकी सम्पत्ति का कोई चिंतवन भी नहीं कर सकता इसलिए आप अचिंत्यर्द्धि हैं ।।४५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः ।।४५६।। जगत के समस्त पदार्थों को जानने योग्य होने से अथवा पूर्ण ज्ञानी होने से आप समग्रधी हैं ।।४५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्र्याय नमः ।।४५७।। आप सब में मुख्य होने से प्राग्र्य हैं ।।४५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः ।।४५८।। सबमें श्रेष्ठता प्राप्त करने से आप प्राग्रहर हैं ।।४५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्रयाय नमः ।।४५९।। श्रेष्ठों में भी सबसे श्रेष्ठ होने से आप अभ्यग्रय हैं ।।४५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः ।।४६०।। बलवानों में भी अत्यन्तश्रेष्ठ होने से अथवा लोक का मुख्य भाग पसंद करने से प्रत्यग्र हैं ।।४६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्र्याय नमः ।।४६१।। सबके नायक होने से आप अग्र्य हैं ।।४६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः ।।४६२।। सबके अग्रेसर होने से आप अग्रिम हैं ।।४६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः ।।४६३।। आप सबसे बड़े होने से अग्रज हैं ।।४६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातपाय नमः ।।४६४।। कठिन तपश्चरण करने से आप महातपा हैं ।।४६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातेजाय नमः ।।४६५।। अतिशय तेजस्वी होने से व अतिशय पुण्यवान होने से आप महातेज हैं ।।४६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः ।।४६६।। आपकी तपश्चर्या का फल सबसे बड़ा अर्थात् केवलज्ञान है इसलिए आप महोदर्क कहलाते हैं ।।४६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः ।।४६७।। अतिशय प्रतापी होने से अथवा आपका जन्म सबको आनन्द देने वाला होने से आप महोदय हैं ।।४६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे नमः ।।४६८।। अतिशय यशस्वी होने से आप महायशा हैं ।।४६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने नमः ।।४६९।। अतिशय प्रकाशन रूप होने से आप महाधामा हैं ।।४६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासत्वाय नमः ।।४७०।। अतिशय बलवान् होने से आप महासत्व हैं ।।४७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये नमः ।।४७१।। आप अतिशय धीर वीर होने से महाधृति हैं ।।४७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय नमः ।।४७२।। कभी भी व्यग्र न होने से आप महाधैर्य हैं ।।४७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः ।।४७३।। अतिशय सामर्थ्यवान होने से आप महावीर्य हैं ।।४७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासंपदे नमः ।।४७४।। समवशरण रूप अद्वितीय विभूति को धारण करने से आप महासंपत हैं ।।४७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय नमः ।।४७५।। अतिशय बलवान होने से आप महाबल हैं ।।४७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तये नमः ।।४७६।। अनन्त शक्ति होने से आप महाशक्ति हैं ।।४७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे नमः ।।४७७।। अतिशय कांति युक्त होने से आप महा ज्योति हैं ।।४७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये नमः ।।४७८।। पंचकल्याणकों की महाविभूति के स्वामी होने से आप महाविभूति हैं ।।४७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्युतये नमः ।।४७९।। अतिशय शोभायमान होने से आप महाद्युति हैं ।।४७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामतये नमः ।।४८०।। अतिशय बुद्धिमान होने से आप महामति हैं ।।४८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये नमः ॥४८१॥ अतिशय न्यायवान होने से आप महानीति हैं ॥४८१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षांतये नमः ॥४८२॥ अतिशय क्षमावान् होने से आप महाक्षांति हैं ॥४८२॥

ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः ॥४८३॥ अतिशय दयालु होने से आप महादय हैं ॥४८३॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञाय नमः ॥४८४॥ अतिशय प्रवीण होने से आप महाप्राज्ञ हैं ॥४८४॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाय नमः ॥४८५॥ अतिशय भाग्यशाली होने से आप महाभाग हैं ॥४८५॥

ॐ ह्रीं अर्हं महानंदाय नमः ॥४८६॥ अतिशय आनन्द स्वरूप होने से अथवा भव्य जीवों को आनन्द देने से आप महानन्द हैं ॥४८६॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये नमः ॥४८७॥ शास्त्रों के मुख्य कर्ता होने से आप महा कवि हैं ॥४८७॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामहाय नमः ॥४८८॥ अत्यन्त तेजस्वी होने से आप महा महा हैं ॥४८८॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तिये नमः ॥४८९॥ आपकी कीर्ति सब जगह व्याप्त होने से आप महाकीर्ति हैं ॥४८९॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाकांतये नमः ॥४९०॥ अत्यन्त कांति युक्त होने से आप महाकांति हैं ॥४९०॥

ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे नमः ॥४९१॥ अतिशय सुन्दर शरीर होने से आप महावपु हैं ॥४९१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय नमः ॥४९२॥ बड़े भारी दानी होने से आप महादान हैं ॥४९२॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय नमः ॥४९३॥ सबसे बड़े केवलज्ञान को धारण करने से आप महा ज्ञान हैं ॥४९३॥

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय नमः ॥४९४॥ योगों का अत्यन्त निरोध करने से आप महायोग हैं ॥४९४॥

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाय नमः ॥४९५॥ लोकों का कल्याण करने वाले गुणों से सुशोभित होने से आप महागुण हैं ॥४९५॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामहापतये नमः ॥४९६॥ पंच कल्याण रूप महापूजा के स्वामी होने से आप महापति हैं ॥४९६॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्त महाकल्याण पंचकाय नमः ॥४९७॥ आपको गर्भावतार आदि पाँचों कल्याणक प्राप्त हुए हैं इसलिए आप महाकल्याणक पंचक कहे जाते हैं ॥४९७॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः ॥४९८॥ अतिशय समर्थ अथवा सबसे बड़े स्वामी होने से आप महा प्रभु हैं ॥४९८॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः ॥४९९॥ अशोक वृक्षादि आठों प्रातिहार्यों के स्वामी होने से आप महाप्रातिहार्याधीश कहे जाते हैं ॥४९९॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः ॥५००॥ सब मुनियों में उत्तम होने से अथवा प्रत्यक्ष ज्ञानी होने से आप महा मुनि हैं ॥५००॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः ॥५०१॥ सब मुनियों में उत्तम होने से अथवा प्रत्यक्ष ज्ञानी होने से आप महामुनि हैं ॥५०१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामौन्याय नमः ।।५०२।। आपके वचनालाप पर रहित होने से आप महामौनी हैं ।।५०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यान्याय नमः ।।५०३।। शुक्ल ध्यान का ध्यान करने से आप महाध्यानी हैं ।।५०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय नमः ।।५०४।। विषय कषायों का दमन करने से अथवा शक्तिमान होने से आप महादम हैं ।।५०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः ।।५०५।। अतिशय क्षमावान होने से आप महाक्षम हैं ।।५०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः ।।५०६।। पूर्ण ब्रह्मचारी होन से अथवा शील युक्त होने से आप महाशील हैं ।।५०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः ।।५०७।। स्वाभाविक परिणति रूप अग्नि में विभाव परिणति रूप सामग्री को हवन कर अथवा तपश्चरण रूप अग्नि में विषयाभिलाषा को हवन कर महायज्ञ करने से अथवा केवलज्ञान रूप महायज्ञ प्राप्त होने से आप महायज्ञ कहलाते हैं ।।५०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः ।।५०८।। अतिशय पूज्य होने आप महामख कहे जाते हैं ।।५०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः।।५०९।। पंचमहाव्रतों के स्वामी होने से आप महाव्रतपति कहे जाते हैं ।।५०९।।

ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः ।।५१०।। जगत पूज्य होने से आप मह्य हैं ।।५१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकांतिधराय नमः ।।५११।। अत्यन्त तेज को धारण करने से आप महाकांतिधर हैं ।।५११।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः ।।५१२।। सब जीवों की रक्षा करने से अथवा सबके स्वामी होने से आप अधिप हैं ।।५१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीमयाय नमः ।।५१३।। समस्त जीवों से मैत्रीभाव रखने से आप महा मैत्रीमय हैं ।।५१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः ।।५१४।। किसी भी परिणाम से गिने अथवा नापे नहीं जाते इसलिए आप अमेय हैं ।।५१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं महापायो नमः ।।५१५।। मोक्ष के लिए सब से बड़ा उपाय करने से आप महोपाय हैं ।।५१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः ।।५१६।। मंगलमय, ज्ञानमय अथवा तेज स्वरूप होने से आप महोमय हैं ।।५१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुण्यकाय नमः ।।५१७।। सब जीवों पर दया करने से आप कारुणिक कहे जाते हैं ।।५१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रे नमः ।।५१८।। सबको जानने से आप मंता हैं ।।५१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्राय नमः ।।५१९।। अनेक मंत्रों के स्वामी होने से आप महामंत्र हैं ।।५१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः ।।५२०।। इन्द्रिय निग्रह करने वालों में सबसे श्रेष्ठ होने से आप महायति हैं ।।५२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः ॥५२१॥ गंभीर दिव्य ध्वनि सहित होने से आप महानाद हैं ॥५२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः ॥५२२॥ आपकी ध्वनि अतिशय सुन्दर होने से आप महाघोष हैं ॥५२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेज्जाय नमः ॥५२३॥ बड़े पुरुषों के द्वारा पूज्य होने से अथवा केवल ज्ञान रूप यज्ञ करने से आप महेज्य हैं ॥५२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं महसांपतये नमः ॥५२४॥ समस्त तेज के अधिकारी होने से आप महासांपति हैं ॥५२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः ॥५२५॥ अहिंसादिव्रतों के धारण करने से आप महाध्वरधर कहलाते हैं ॥५२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः ॥५२६॥ धुरंधर होने से आप धुर्य हैं ॥५२६॥

ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय नमः ॥५२७॥ अतिशय उदार होने से आप महौदार्य हैं ॥५२७॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिष्ठवाचे नमः ॥५२८॥ आपकी वाणी परमपूज्य होने से आप महिष्ठवाक् हैं ॥५२८॥

ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः ॥५२९॥ सब में बड़े अथवा पूज्य होने से आप महात्मा हैं ॥५२९॥

ॐ ह्रीं अर्हं महसांधात्मने नमः ॥५३०॥ समस्त प्रकाश का तेज स्थान होने से आप महासांधाय हैं ॥५३०॥

ॐ ह्रीं अर्हं महर्षिये नमः ॥५३१॥ सब प्रकार की ऋद्धियों को प्राप्त हने से आप महर्षि हैं ॥५३१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय नमः ॥५३२॥ आपका तीर्थंकर रूप अवतार सबको पूज्य है इसलिए आप महितोदय कहलाते हैं ॥५३२॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः ॥५३३॥ बड़े-बड़े क्लेशों को दूर करने से अथवा महाक्लेश अर्थात् तपश्चरण रूप अंकुश धारण करने से आप महाक्लेशांकुश हैं ॥५३३॥

ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः ॥५३४॥ घातिया कर्मों को जीत लेने से आप शूर हैं ॥५३४॥

ॐ ह्रीं अर्हं धूराय नमः ॥५३५॥ गणधर चक्रवर्ती आदि बड़े-बड़े पुरुषों के स्वामी होने से आप महाभूतपति हैं ॥५३५॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुरुवे नमः ॥५३६॥ धर्मोपदेश सब को देने से आप गुरू हैं ॥५३६॥

ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः ॥५३७॥ अतिशय पराक्रमी होने से अथवा ज्ञान शक्ति अधिक होने से आप महापराक्रमी हैं ॥५३७॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंताय नमः ॥५३८॥ अन्त रहित अपार होने से आप अनन्त हैं ॥५३८॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपुवे नमः ॥५३९॥ क्रोध के भारी शत्रु होने से आप महाक्रोधरिपु हैं ॥५३९॥

ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः ॥५४०॥ सब प्राणियों को वश में करने से अथवा इन्द्रियों को वश मे करने से आप वशी हैं ॥५४०॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः ॥५४१॥ संसार रूप महासागर से पार कर देने से आप महाभवाब्धि संसारी हैं ॥५४१॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रिसूदनाय नमः ।।५४२।। मोह रूपी महापर्वतको भेदन करने से आप महाद्रि सूदन हैं ।।५४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः ।।५४३।। सम्यग्दर्शन आदि अनेक गुणों की खान होने से महागुणाकार हैं ।।५४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांताय नमः ।।५४४।। कषाय रहित होने से आप शान्त हैं ।।५४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वराय नमः ।।५४५।। आप गणधर आदि महा योगियों के स्वामी होने से महा योगीश्वर हैं।।५४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशमिने नमः ।।५४६।। समस्त कर्मों का क्षय करने से अथवा परम सुखी होने से आप शमी हैं ।।५४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः ।।५४७।। परम शुक्लध्यान के स्वामी होने से आप महाध्यान पति है ।।५४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यान महाधर्माय नमः ।।५४८।। अहिंसा धर्म का ध्यान करने से आप ध्यान महाधर्म हैं ।।५४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः ।।५४९।। महाव्रतों को धारण करने से आप महाव्रती है ।।५४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिहाय नमः ।।५५०।। कर्मरूप महाशत्रुओं को नाश करने से आप महाकर्मारिहा हैं ।।५५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः ।।५५१।। आत्मा का स्वरूप जानने से आप आत्मज्ञ हैं ।।५५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः ।।५५२।। समस्त देवों के स्वामी होने से आप महादेव है ।।५५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेशिताय नमः ।।५५३।। विलक्षण ऐश्वर्य को धारण करने से आप महेशिता कहलाते हैं ।।५५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः ।।५५४।। शारीरिक और मानसिक क्लेशों को दूर करने से आप सर्वक्लेशापह हैं ।।५५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः ।।५५५।। निश्चय रत्नत्रय को सिद्ध करने से आप साधु हैं ।।५५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषापहराय नमः ।।५५६।। भव्य जीवों के समस्त दोष दूर करने से आप सर्वदोषापहर हैं ।।५५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः ।।५५७।। अनेक जन्मों में किये हुए पापों का हरण करने से आप हर हैं ।।५५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः ।।५५८।। आप असंख्य गुणों को धारण करने से असंख्येयाय हैं ।।५५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः ।।५५९।। प्रमाण रहित शक्ति को धारण करने से आप अप्रमेयात्मा हैं ।।५५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः ।।५६०।। आप परम शांतस्वरूप होने से शमात्मा हैं ।।५६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः ।।५६१।। आप शांतता की खान होने से प्रशमाकर हैं ।।५६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः ।।५६२।। आप समस्त योगियों के ईश्वर होने से सर्वयोगीश्वर हैं ।।५६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्याय नमः ।।५६३।। आप किसी के चिंतवन में नहीं आते इसलिए अचिन्त्य हैं ।।५६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः ।।५६४।। समस्त शास्त्रों के रहस्यरूप होने से अथवा भावश्रुतज्ञान-रूप होने से आप श्रुतात्मा हैं ।।५६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्ठरश्रवाय नमः ।।५६५।। तीनों लोकों के समस्त पदार्थों के जानने से आप विष्टरश्रवा हैं ।।५६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः ।।५६६।। जितेन्द्रिय होने से अथवा सबको शिक्षा देने से आप दान्तात्मा हैं ।।५६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः ।।५६७।। आप इंद्रियों को दमन करने रूप तीर्थ के स्वामी होने से अथवा योग शास्त्र के स्वामी होने से दमतीर्थेश कहलाते हैं ।।५६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः ।।५६८।। आप योगस्वरूप होने से योगात्मा हैं ।।५६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसर्वगाय नमः ।।५६९।। ज्ञान के द्वारा सब जगह होने से आप ज्ञानसर्वग कहलाते हैं ।।५६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः ।।५७०।। आप एकाग्रता से आत्मा का ध्यान करने से प्रधान हैं ।।५७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः।।५७१।। आप ज्ञानस्वरूप होने से ज्ञानात्मा हैं ।।५७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः ।।५७२।। आप समवशरण रूप लक्ष्मी उत्कृष्ट है अथवा धर्मोपदेश के रूप कार्य प्रशंसनीय है अथवा सबके कल्याणकारी हैं इसलिए प्रकृति हैं ।।५७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः ।।५७३।। उत्कृष्ट लक्ष्मी को धारण करने से आप परम हैं ।।५७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः ।।५७४।। परम उदय को धारण करने से अथवा आपका उदय कल्याणकारी होने से आप परमोदय हैं ।।५७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबंधाय नमः ।।५७५।। कर्मबन्ध सब नष्ट होने से आप प्रक्षीणबंध हैं ।।५७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः ।।५७६।। कामदेव के परम शत्रु होने से आप कामारि हैं ।।५७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः ।।५७७।। सबका कल्याण करने से आप क्षेमकृत हैं ।।५७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः ।।५७८।। आपका मत वा उपदेश सबको कल्याणकारी होने से आप क्षेमशासन कहलाते हैं ।।५७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय नमः ।।५७९।। ओंकार स्वरूप होने से आप प्रणव हैं ।।५७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयाय नमः ।।५८०।। सबके मित्र होने से आप प्रणय हैं ।।५८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय नमः ।।५८१।। जगत् को प्रिय होने से अथवा सबको शरण देने से आप प्राण हैं ।।५८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः ।।५८२।। अतिशय दयालु होने से आप प्राणों को देने वाले हैं इस-लिए आप प्राणद हैं ।।५८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः ।।५८३।। आप प्रणाम करते हुए इंद्रादिकों के स्वामी हैं अथवा प्रणाम करते हुए भव्य जीवों का पालन-पोषण करने वाले हैं इसलिए आप प्रणतेश्वर हैं ।।५८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः ॥५८४॥ प्रमाण नय के वक्ता होने से अथवा ज्ञानस्वरूप होने से या ज्ञान का साधन होने अथवा लोक प्रमाण एवं देह प्रमाण होने से आप प्रमाण हैं ॥५८४॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणधिये नमः ॥५८५॥ योगी लोग आपको बड़ी गुप्त रीति से चिंतवन करते हैं अथवा आप सबके मर्मी वा जानने वाले हैं इसलिए आपको प्रणधि कहते हैं ॥५८५॥

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः ॥५८६॥ मोक्ष प्राप्त करने में चतुर होने से आप दक्ष हैं ॥५८६॥

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः ॥५८७॥ सरल स्वभावी होने से आप दक्षिण हैं ॥५८७॥

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः ॥५८८॥ केवलज्ञान रूप यज्ञ को करने से अथवा पाप रूप कर्मों का हवन करने से आप अध्वर्यु हैं ॥५८८॥

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः ॥५८९॥ सन्मार्ग की प्रवृत्ति करने से आप अध्वर हैं ॥५८९॥

ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः ॥५९०॥ सदा संतुष्ट रहने से आप आनन्द हैं ॥५९०॥

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय नमः ॥५९१॥ सबको आनन्द देने से आप नन्दन हैं ॥५९१॥

ॐ ह्रीं अर्हं नंदाय नमः ॥५९२॥ सदा बढ़ते रहने से आप नन्द हैं ॥५९२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वंद्याय नमः ॥५९३॥ सभी के द्वारा वंदना और स्तुति करने से आप वंद्य हैं ॥५९३॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्याय नमः ॥५९४॥ आप अठारह प्रकार के दोषों से रहित होने के कारण सब प्रकार की निन्दा के अयोग्य हैं ॥५९४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः ॥५९५॥ सर्वथा आनन्ददायक होने से अथवा आप के समवशरण के चारों वन भयरहित होने से आप अभिनन्दन हैं ॥५९५॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्नाय नमः ॥५९६॥ कामदेव को नाश करने से आप कामहा हैं ॥५९६॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः ॥५९७॥ भक्त, भव्य जीवों की इच्छा पूर्ण कर देने से आप कामद हैं ॥५९७॥

ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः ॥५९८॥ अतिशय मनोहर होने से अथवा आपकी प्राप्ति की इच्छा सबको होने से आप काम्य हैं ॥५९८॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः ॥५९९॥ इच्छित पदार्थों को देने से आप कामधेनु हैं ॥५९९॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरिंजयाय नमः ॥६००॥ रागादि समस्त शत्रुओं को जीतने से आप अरिंजय कहलाते हैं ॥६००॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः ॥६०१॥ बिना किसी संस्कार के स्वभाव से ही सुन्दर होने से आप असंस्कृत सुसंस्कार हैं ॥६०१॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृते नमः ॥६०२॥ आपका स्वरूप प्रकृति से उत्पन्न नहीं हुआ है। वह असाधारण अथवा अद्वितीय है इसलिये आप अप्राकृत हैं ॥६०२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतांतकृते नमः ॥६०३॥ रोग अथवा विकारों को नाश करने से आप वैकृतांतकृत हैं ॥६०३॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृते नमः ॥६०४॥ जन्म, मरण रूप संसार को नाश करने से अथवा मोक्ष को समीप करने से आप अंतकृत हैं ॥६०४॥

ॐ ह्रीं अर्हं कांतगवे नमः ॥६०५॥ सुन्दर वाणी अथवा सुन्दर प्रभा होने से आप कांतगु हैं ॥६०५॥

ॐ ह्रीं अर्हं कांतायनमः ।।६०६।। शोभायुक्त होने से आप कांत हैं ।।६०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणये नमः ।।६०७।। चिंतामणि के समान इच्छित पदार्थों को देने से आप चिंतामणि हैं ।।६०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्ठदाय नमः ।।६०८।। आप भव्य जीवों को इष्ट पदार्थों की प्राप्ति कराते हैं इसलिये आप अभीष्ठदा हैं ।।६०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः ।।६०९।। काम क्रोधादि किसी भी योद्धा से आप जीते नहीं जाते इसलिये आप अजित हैं ।।६०९।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारिणे नमः ।।६१०।। कामरूप शत्रु को जीतने से आप जितकामारि हैं ।।६१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः ।।६११।। मर्यादा रहित होने से आप अमित हैं ।।६११।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः ।।६१२।। आपका शासन अपार होने से आप अमितशासन हैं ।।६१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधजिताय नमः ।।६१३।। क्रोध को जीत लेने से आप जितक्रोध हैं ।।६१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः ।।६१४।। कर्मरूपी शत्रुओं को जीतने से आप जितामित्र हैं ।।६१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः ।।६१५।। समस्त क्लेशों को जीत लेने से आप जितक्लेश हैं ।।६१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितांतकाय नमः ।।६१६।। यम को जीत लेने से आप जितांतक कहलाते हैं ।।६१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः ।।६१७।। गणधरादि जिनों के इन्द्र होने से आप जिनेन्द्र हैं ।।६१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय नमः ।।६१८।। उत्कृष्ट आनन्द स्वरूप होने से आप परमानन्द हैं ।।६१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनींद्राय नमः ।।६१९।। मुनियों के इन्द्र होने से आप मुनीन्द्र हैं ।।६१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभिस्वनाय नमः ।।६२०।। दुंदुभियों के समान आपकी ध्वनि होने से आप दुंदुभिस्वन हैं ।।६२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवंद्याय नमः ।।६२१।। महेन्द्र के द्वारा पूज्य अथवा वंदनीक होने से आप महेन्द्रवंद्य हैं ।।६२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः ।।६२२।। योगियों के इन्द्र होने से आप योगीन्द्र हैं ।।६२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः ।।६२३।। यतियों के इन्द्र होने से आप यतीन्द्र हैं ।।६२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय नमः ।।६२४।। महराजा नाभिराजा के पुत्र होने से आप नाभिनन्दन कहलाते हैं ।।६२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः ।।६२५।। पिता का नाम नाभि होने से आप नाभेय कहलाते हैं ।।६२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः ।।६२६।। महाराज नाभि के घर जन्म लेने से आप नाभिज हैं ।।६२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजाताय नमः ।।६२७।। आप उत्पत्ति रहित होने से अजात हैं ।।६२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रताय नमः ।।६२८।। आप अहिंसा आदि उत्तम व्रतवान् होने से सुव्रत हैं ।।६२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनुवे नमः ।।६२९।। कर्मभूमि की रचना का अथवा मोक्ष मार्ग का स्वरूप बतलाने से आप मनु हैं ।।६२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः ।।६३०।। सबसे श्रेष्ठ होने से आप उत्तम कहलाते हैं ।।६३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः ।।६३१।। किसी से भी आपका भेद नहीं हो सकता इसलिये आप अभेद्य हैं ।।६३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनत्याय नमः ।।६३२।। आप नाश रहित होने से अनत्य हैं ।।६३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वानाय नमः ।।६३३।। आप अनशन आदि तपश्चरण करने से अनाश्वान हैं ।।६३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः ।।६३४।। सबमें अधिक अर्थात् पूज्य होने से आप अधिक हैं।। ६३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः ।।६३५।। आप सबसे उत्तम उपदेश को देने से अधिगुरु हैं ।।६३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः ।।६३६।। आपकी दिव्यध्वनि सबके लिये कल्याणकारी है इसलिये आप सुगी कहलाते हैं ।।६३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधे नमः ।।६३७।। आप सम्यग्ज्ञानी होने से सुमेधा हैं ।।६३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः ।।६३८।। महापराक्रमी होने से आप विक्रमी हैं ।।६३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिणे नमः ।।६३९।। सबके स्वामी होने से अथवा सब पदार्थों के यथार्थ ज्ञानी होने से आप स्वामी हैं ।।६३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः ।।६४०।। किसी के द्वारा निवारण नहीं किये जाने से आप दुराधर्ष हैं।।६४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः ।।६४१।। अभिलाषा रहित होने से अथवा स्थिर भाव होने से आप निरुत्सुक हैं ।।६४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः ।।६४२।। विशेष रूप होने से आप विशिष्ट हैं ।।६४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः ।।६४३।। आप शिष्ट पुरुषों का पालन करने से शिष्टभुक् हैं ।।६४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः ।।६४४।। राग, द्वेष, मोह आदि दोषों से रहित होने से आप शिष्ट हैं ।।६४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः ।।६४५।। विश्वास रूप होने से अथवा ज्ञान रूप होने से आप प्रत्यय हैं ।।६४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामनसे नमः ।।६४६।। आप मनोहर होने से कामन हैं ।।६४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः ।।६४७।। आप पाप रहित होने से अनघ हैं ।।६४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे नमः ।।६४८।। आप मोक्ष प्राप्त करने से क्षेमी हैं ।। ६४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय नमः ।।६४९।। सबका कल्याण करने से आप क्षेमंकर हैं ।।६४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः ।।६५०।। आपका कभी क्षय नहीं होता इसलिये आप अक्षय हैं ।।६५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः ।।६५१।। सभी जीवों का कल्याण करने वाले जैन धर्म के प्रवर्तक होने से आप क्षेमधर्मपति हैं ।।६५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे नमः ।।६५२।। क्षमावान् होने से आप क्षमी हैं ।।६५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः ।।६५३।। इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण न होने से अथवा मिथ्यात्वियों के द्वारा ग्रहण न होने से आप अग्राह्य हैं ।।६५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान निग्राह्याय नमः ।।६५४।। निश्चय ज्ञान के द्वारा ग्रहण करने योग्य होने से आप ज्ञान निग्राह्य हैं ।।६५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यान गम्याय नमः ।।६५५।। आप ध्यान के द्वारा जानने योग्य होने से ध्यानगम्य हैं ।।६५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः ।।६५६।। आप सबसे उत्कृष्ट हैं इसलिये निरुत्तर हैं ।।६५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतये नमः ।।६५७।। आप पुण्यवान होने से सुकृती हैं ।।६५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः ।।६५८।। शब्दों की खान होने से आप धातु हैं ।।६५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः ।।६५९।। आप पूजा करने के योग्य होने से इज्यार्ह हैं ।।६५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः ।।६६०।। नयों के सम्यक् प्रकार ज्ञाता होने से आप सुनय हैं ।।६६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निवासाय नमः ।।६६१।। लक्ष्मी के निवास स्थान होने से आप श्री निवास हैं ।।६६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः ।।६६२।। चतुर्वक्त्रः ।।६६३।। चतुरास्य ।।६६४।। चतुर्मुखः ।।६६५।। एक मुख होकर भी चारों ओर से दर्शन होने से अथवा लोगों को चार मुख दीखने से आप चतुरानन तथा चतुर्मुख कहलाते हैं ।।६६२, ६६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः ।।६६६।। सत्यस्वरूप होने से अथवा जीवों का कल्याण करने से आप सत्यात्मा हैं ।।६६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः ।।६६७।। आपका विज्ञान सत्य अथवा सफल होने से आप सत्य विज्ञान हैं ।।६६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः ।।६६८।। आपकी वाणी यथार्थ पदार्थों का निरूपण करने वाली है इसलिये आप सत्यवाक् कहलाते हैं ।।६६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नमः ।।६६९।। आपका शासन (मत) यथार्थ होने से अथवा सफल अर्थात् साक्षात् मोक्ष प्राप्त करने वाला होने से आप सत्यशासन हैं ।।६६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशीर्षे नमः ।।६७०।। दोनों लोकों में फलदायक होने से आप सत्याशीर्ष हैं ।।६७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसंधानाय नमः ।।६७१।। प्रतिज्ञा को दृढ़ रखने से अथवा सत्य स्वरूप रखने से आप सत्यसंधान हैं ।।६७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः ।।६७२।। आप शुद्ध मोक्षस्वरूप होने से सत्य हैं ।।६७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यपरायणाय नमः ।।६७३।। आप सत्यस्वरूप में तत्पर होने से सत्यपरायण कहे जाते हैं ।।६७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः ।।६७४।। अत्यन्त स्थिर होने से आप स्थेयान् हैं ।।६७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः ।।६७५।। अतिशय स्थूल होने से आप स्थवीयान् हैं ।।६७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः ।।६७६।। भक्तों के समीप होने से आप नेदीयान् हैं ।।६७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः ।।६७७।। पापों से दूर रहने के कारण आप दवीयान् हैं ।।६७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः ।।६७८।। आपके दर्शन दूर ही से होते हैं इसलिये आप दूरदर्शन हैं ।।६७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अणोरणीयसे नमः ।।६७९।। परमाणु से भी अत्यन्त सूक्ष्म होने से आप अणोरणीयान् हैं ।।६७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनणुवे नमः ।।६८०।। सूक्ष्म न होने से आप अनणु हैं ।।६८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गरीसयां आद्यगुरवे नमः ।।६८१।। बड़ों में सबसे बड़े होने से आप गरीयसां आद्य गुरू कहलाते हैं ।।६८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा योगाय नमः ।।६८२।। सदा योग स्वरूप होने से आप सदायोग हैं ।।६८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा भोगाय नमः ।।६८३।। आप सदा आनन्द के भोक्ता होने से सदा भोग हैं ।।६८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा तृप्ताय नमः ।।६८४।। सदा तृप्त रहने से आप सदा तृप्त हैं ।।६८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा शिवाय नमः ।।६८५।। सदा कल्याण स्वरूप अथवा मोक्ष स्वरूप रहने से आप सदा शिव कहलाते हैं ।।६८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा गतये नमः ।।६८६।। आप सदा ज्ञान स्वरूप होने से सदागति हैं ।।६८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा सौख्याय नमः ।।६८७।। सदा सुख स्वरूप रहने से सदा सौख्य है ।।६८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा विद्याय नमः ।।६८८।। आप सदा ज्ञानस्वरूप रहने से सदा विद्य हैं ।।६८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः ।।६८९।। आप सदा उदय रूप होने से अर्थात् सदा कल्याण रूप अथवा प्रकाश स्वरूप रहने से आप सदोदय कहलाते हैं ।।६८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः ।।६९०।। आपका सुन्दर शब्द होने से आप सुघोष हैं ।।६९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः ।।६९१।। सुन्दर मुख रहने से आप सुमुख हैं ।।६९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः ।।६९२।। शान्त रहने से आप सौम्य हैं ।।६९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः ।।६९३।। सबको सुख देने से आप सुखद हैं ।।६९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः ।।६९४।। सबका हित करने से आप सुहित हैं ।।६९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः ।।६९५।। निष्कपट, शुद्ध, निर्मल होने से आप सुहृत् हैं ।।६९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तये नमः ।।६९६।। मिथ्यादृष्टियों द्वारा आपका स्वरूप न जानने से आप सुगुप्त हैं ।।६९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः ।।६९७।। आप तीनों गुप्तियों को पालन करने से गुप्तिभृत हैं ।।६९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोप्तये नमः ।।६९८।। पापों से आत्मा की रक्षा करने से अथवा जीवों की रक्षा करने से आप गोप्ता हैं ।।६९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः ।।६९९।। तीनों लोकों को प्रत्यक्ष देखने से आप लोकाध्यक्ष हैं ।।६९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः।।७००।।इंद्रियदमन करने से तपश्चरण के स्वामी होने के कारण आप दमेश्वर कहलाते हैं ।।७००।।

ॐ ह्रीं अर्हं बृहद बृहस्पतये नमः ।।७०१।। इन्द्रों के सबसे बड़े गुरु होने से आप बृहद् बृहस्पति हैं ।।७०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाग्म्ये नमः ।।७०२।। विलक्षण वक्ता होने से आप वाग्मी हैं ।।७०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः ।।७०३।। वाणी के स्वामी होने से वाचस्पति हैं ।।७०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः ।।७०४।। उदार बुद्धि होने से अर्थात् सब को धर्म का उपदेश देने से आप उदारधी हैं ।।७०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः ।।७०५।। बुद्धिमान होने से आप मनीषी हैं ।।७०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीषणाय नमः ।।७०६।। अपार बुद्धिमान होने से आप धीष्ण हैं ।।७०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः ।।७०७।। धारण पटु बुद्धि सहित होने कारण धीमान् कहलाते हैं ।।७०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः ।।७०८।। बुद्धि के स्वामी होने से आप शेमुशीष हैं ।।७०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः ।।७०९।। सभी भाषाओं के स्वामी होने से आप गिरांपति हैं ।।७०९।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेकरूपाय नमः ।।७१०।। अनेक रूप होने से आप नेकरूप हैं ।।७१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं नयोतुंगाय नमः ।।७११।। नयों का उत्कृष्ट स्वरूप कहने से आप नयोतुन्ग हैं ।।७११।।

ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः ।।७१२।। आप अनेक गुणों को धारण करने से नेकात्मा हैं ।।७१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृते नमः ।।७१३।। पदार्थों को अनेक धर्मरूप कथन करने से आप नैकधर्म-कृत हैं ।।७१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेय नमः ।।७१४।। साधारण पुरुषों के द्वारा जानने के अयोग्य होने से आप अविज्ञेय हैं ।।७१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मिने नमः ।।७१५।। आपके स्वरूप का कोई तर्कवितर्क नहीं कर सकता इसलिये आप अप्रतर्क्यात्मा हैं ।।७१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः ।।७१६।। जीवों के समस्त कृत्य जानने से आप कृतज्ञ हैं ।।७१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृत लक्षणाय नमः ।।७१७।। समस्त शुभ लक्षणों से संयुक्त होने के कारण आप कृत लक्षण हैं ।।७१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः ।।७१८।। अंतरंग में ज्ञान होने से आप ज्ञानगर्भ हैं ।।७१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः ।।७१९।। दयालु होने से आप दयागर्भ हैं ।।७१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः ।।७२०।। रत्नत्रयों को धारण करने से अथवा गर्भावस्था ही में रत्नत्रय का स्वरूप जानने से अथवा गर्भावतार होने से पहले ही रत्नों की वर्षा होने से आप रत्नगर्भ हैं ।।७२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः ।।७२१।। अतिशय प्रभावशाली होने से आप प्रभास्वर हैं ।।७२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः ।।७२२।। गर्भावस्था में ही लक्ष्मी प्राप्त होने से आप पद्मगर्भ हैं ।।७२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगगर्भाय नमः ।।७२३।। आपके ज्ञान के भीतर समस्त जगत होने से आप जगत गर्भ हैं ।।७२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः ।।७२४।। आपका आत्मा स्वर्ण के समान निर्मल होने से अथवा गर्भावतार के समय सुवर्ण की वर्षा होने से आप हेमगर्भ हैं ।।७२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः ।।७२५।। आपका सुन्दर दर्शन होने से आप सुदर्शन हैं ।।७२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः ।।७२६।। समवशरणादि ऐश्वर्य सहित होने से आप लक्ष्मीवान् हैं ।।७२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः ।।७२७।। देवों को प्रत्यक्ष होने से अथवा तेरह प्रकार के चारित्र को धारण करने वाले मुनियों को प्रत्यक्ष होने से अथवा बाल, युवा, वृद्ध तीनों अवस्थाओं में एक सा प्रत्यक्ष होने से आप त्रिदशाध्यक्ष हैं ।।७२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः ।।७२८।। अत्यन्त दृढ़ होने से आप दृढीयान हैं ।।७२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः ।।७२९।। सबके स्वामी होने के आप इन हैं ।।७२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशिताय नमः ।।७३०।। तेजोनिधि अर्थात् ऐश्वर्यवान् होने से आप ईशिता हैं ।।७३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः ।।७३१।। भव्य जीवों के अंतःकरण को हरण करने से आप मनोहर हैं ।।७३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय नमः ।।७३२।। अंग उपंग मनोहर रहने से आप मनोज्ञांग हैं ।।७३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः ।।७३३।। बुद्धि को प्रेरणा देने से अथवा भव्य जीवों को सुबुद्धि देने से आप धीर हैं ।।७३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरशासनाय नमः ।।७३४।। आपका शासन अथवा शास्त्र गंभीर होने से आप गंभीरशासन हैं ।।७३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः ।।७३५।। आप धर्म के स्तंभ होने से धर्मयूप हैं ।।७३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः ।।७३६।। सब जीवों पर दया करना एवं आपकी पूजा होने से आप दयायाग हैं ।।७३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमिने नमः ।।७३७।। धर्मरूपी रथ की धुरी होने से आप धर्मनेमि हैं ।।७३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः ।।७३८।। आप मुनियों के ईश्वर होने से मुनीश्वर हैं ।।७३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः ।।७३९।। धर्मचक्र ही आपका आयुध होने से आप धर्मचक्रायुध हैं ।।७३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः ।।७४०।। परमानन्द में क्रीड़ा करने से आप देव हैं ।।७४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्महाय नमः ।।७४१।। शुभाशुभ कर्मों को नाश करने से आप कर्महा हैं ।।७४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः ।।७४२।। धर्म का उपदेश देने से आप धर्मघोषण हैं ।।७४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः ।।७४३।। श्रोताजनों को यथार्थ बोध कराने वाली आपकी वाणी होने से आप अमोघवाक् हैं ।।७४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः ।।७४४।। आपकी आज्ञा कभी व्यर्थ न होने से आप अमोघाज्ञ हैं ।।७४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः ।।७४५।। आप ममत्व रहित होने से निर्मल हैं ।।७४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय नमः ।।७४६।। आपका शास्त्र कभी व्यर्थ न होने से अर्थात् जीवों को मोक्ष प्राप्त करा देने से आप अमोघशासन हैं ।।७४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः ।।७४७।। आपका स्वरूप आनंददायक होने से आप सुरूप हैं ।।७४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः ।।७४८।। आपके ज्ञान का अतिशय महात्म्य होने से आप सुभग हैं ।।७४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः ।।७४९।। ज्ञानदान, अभयदान आदि देने से आप त्यागी हैं ।।७४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः ।।७५०।। आत्म सिद्धांत तथा कालस्वरूप जानने से आप समयज्ञ हैं ।।७५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः ।।७५१।। समाधान रूप होने से अथवा ध्यान स्वरूप होने से आप समाहित हैं ।।७५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः ।।७५२।। निराकुल स्वरूप सुख में निमग्न रहने से आप सुस्थित हैं ।।७५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे नमः ।।७५३।। आत्मा की निश्चलता को सेवन करने से आप स्वास्थ्यभाक् हैं ।।७५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थाय नमः ।।७५४।। सदा आत्मनिष्ठ होने से आप स्वस्थ हैं ।।७५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः ।।७५५।। कर्मरूप रज से रहित होने से अथवा ज्ञानावरण, दर्शनावरण कर्म रहित होने से आप नीरजस्क हैं ।।७५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः ।।७५६।। आपका कोई स्वामी न होने से आप निरुद्धव हैं ।।७५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः ।।७५७।। कर्म के लेप रहित होने से आप निर्लेप हैं ।।७५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः ।।७५८।। दोष रहित होने से आप निष्कलंकात्मा हैं ।।७५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः ।।७५९।। रागादि दोषों से रहित होने से अथवा मोक्ष लक्ष्मी में प्रेम होने से आप वीतराग हैं ।।७५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः ।।७६०।। आप इच्छा रहित होने से गतस्पृह हैं ।।७६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं वश्येंद्रियाय नमः ।।७६१।। इन्द्रियों को वश करने से आप वश्येन्द्रिय हैं ।।७६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः ।।७६२।। संसार रूपी बंधन से रहित होने के कारण आप विमुक्तात्मा हैं ।।७६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः ।।७६३।। दुष्ट भाव न रहने से अथवा निष्कंटक होने से आप निःसपत्न हैं ।।७६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितेंद्रियाय नमः ।।७६४।। आप इन्द्रियों को जीतने से जितेंद्रिय हैं ।।७६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांताय नमः ।।७६५।। शांत होने से अथवा रागद्वेष रहित होने से आप प्रशांत हैं ।।७६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत धामर्षये नमः ।।७६६।। अनन्त प्रकाश को धारण करते हुये भी पूज्य होने से आप अनंतधामर्षि हैं ।।७६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः ।।७६७।। सबको सुख देने से आप मंगल हैं ।।७६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः ।।७६८।। पापों को दूर करने से आप मलहर हैं ।।७६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः ।।७६९।। समस्त पापों से रहित होने से आप अनघ हैं ।।७६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः ।।७७०।। आप के समान अन्य कोई न होने से आप अनीदृक् हैं ।।७७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपमाभूताय नमः ।।७७१।। सबके लिये उपमा योग्य होने से आप उपमाभूत हैं ।।७७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः ।।७७२।। महाभाग्यशाली होने से अथवा शुभाशुभ दाता होने से आप दिष्टि हैं ।।७७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः ।।७७३।। प्रबल अथवा स्तुति करने योग्य होने से आप देव हैं ।।७७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः ।।७७४।। इन्द्रियों के अगोचर अथवा वचनों के अगोचर होने से आप अगोचर हैं ।।७७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तये नमः ।।७७५।। शरीर रहित होने से आप अमूर्त हैं ।।७७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः ।।७७६।। पुरुषाकार होने से आप मूर्तिमान हैं ।।७७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै नमः ।।७७७।। अद्वितीय होने से अथवा बिना किसी भी सहायता के मोक्ष प्राप्त कर लेने से आप एक हैं ।।७७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनेकस्मै नमः ।।७७८।। आप अनेक रूप होने से अथवा सब भव्य जीवों का सहायक होने से नैक हैं ।।७७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः ।।७७९।। आत्मा से अतिरिक्त अन्य तत्त्वों को न देखने से अर्थात् उनमें तल्लीन न होने से आप नानैकतत्त्वदृक् कहलाते हैं ।।७७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः ।।७८०।। केवल अध्यात्म शास्त्रों के जानने योग्य न होने से आप अध्यात्मत्मगम्य हैं ।।७८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने नमः ।।७८१।। संसारी जीवों के जानने योग्य न होने से आप अगम्यात्मा हैं ।।७८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः ।।७८२।। योग के जानकार होने से आप योगवित् हैं ।।७८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगवंदिताय नमः ।।७८३।। योगियों के द्वारा वंदना करने योग्य होने से आप योगवंदित हैं ।।७८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः ।।७८४।। ज्ञान के द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से आप सर्वत्रग हैं ।।७८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदा भाविने नमः ।।७८५।। सदा विद्यमान रहने से आप सदा भावी हैं ।।७८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृगे नमः ।।७८६।। तीनों काल अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान काल सम्बन्धी समस्त पदार्थों को देखने से त्रिकाल विषयार्थदृग हैं ।।७८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः ।।७८७।। सबको सुख का कर्त्ता होने से आप शंकर हैं ।।७८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः ।।७८८।। यथार्थ सुख के अर्थात् मोक्ष रूप सुख के वक्ता होने से आप शंवद हैं ।।७८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं दान्ताय नमः ।।७८९।। मन को वश करने से आप दांत हैं ।।७८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः ।।७९०।। आप इन्द्रियों को निग्रह करने से दमी हैं ।।७९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षांतिपरायणाय नमः ।।७९१।। क्षमा करने में तथा तत्पर रहने से आप क्षांतिपरायण हैं ।।७९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः ।।७९२।। जगत् के अधिपति होने से आप अधिप हैं ।।७९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय नमः ।।७९३।। आप अत्यन्त सुखी होने से परमानन्द हैं ।।७९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः ।।७९४।। निज पर के ज्ञाता होने से अथवा विशुद्ध आत्मा का स्वरूप जानने से आप परात्मज्ञ हैं ।।७९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः ।।७९५।। सबसे श्रेष्ठ होने से आप परात्पर हैं ।।७९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद्वल्लभाय नमः ।।७९६।। तीनों लोकों को प्रिय होने से आप त्रिजगद्वल्लभ हैं ।।७९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्च्याय नमः ।।७९७।। सबसे पूज्य होने से आप अभ्यर्च्य हैं ।।७९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगन्मंगलोदयाय नमः ।।७९८।। तीनों लोकों में मंगलदाता होने से आप त्रिजगन्मंगलोदय हैं ।।७९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिने नमः ।।७९९।। आपके चरण कमल तीनों लोकों में इन्द्रों के द्वारा पूज्य होने से आप त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि कहलाते हैं ।।७९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणयेनमः ।।८००।। तीनों लोकों के शिखर के शिखामणि होने से आप त्रिलोकाग्रशिखामणि कहलाते हैं ।।८००।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने नमः ।।८०१।। भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों को प्रत्यक्ष देखने से आप त्रिकालदर्शी हैं ।।८०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः ।।८०२।। तीनों लोकों के ईश (स्वामी) होने से आप लोकेश हैं ।।८०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः ।।८०३।। समस्त प्राणियों की रक्षा का उपदेश देने से आप लोकधाता हैं ।।८०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृढव्रताय नमः ।।८०४।। स्वीकार किये हुए निश्चय चारित्र को निश्चय कर देने से आप दृढ़व्रती हैं ।।८०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिशाय नमः ।।८०५।। तीनों लोकों के प्राणियों में सर्वोत्कृष्ट होने से आप सर्वलोकातिशय हैं ।।८०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः ।।८०६।। पूजा के योग्य होने से आप पूज्य हैं ।।८०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथिये नमः ।।८०७।। समस्त प्राणियों के लिये मुख्य रीति से मोक्षमार्ग का स्वरूप दिखलाने से आप सर्वलोकैकसारथि कहे जाते हैं ।।८०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः ।।८०८।। सबसे प्राचीन होने से अथवा मुक्ति पर्यन्त शरीर में निवास करने से आप पुराण हैं ।।८०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः ।।८०९।। सबसे बड़े होने से अथवा सबको तृप्त करने से अथवा पुण्य

समवशरण में स्थित रहने से आप पुरुष हैं ।।८०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वस्मै: नमः ।।८१०।। सबसे पूर्व अर्थात् अग्रसर होने से आप पूर्व हैं ।।८१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांग विस्तराय नमः ८११।। ग्यारह अंग, चौदह पूर्व का समस्त विचार निरूपण करने से आप कृतपूर्वांग विस्तार हैं ।।८११।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः ।।८१२।। सब देवों में मुख्य होने से आप आदिदेव हैं ।।८१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः ।।८१३।। सब पुराणों में प्रथम होने से आप पुराणाद्य हैं ।।८१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः ८१४।। इंद्रादि देव मुख्यता से आपकी ही आराधना करते हैं अथवा आप सबके ईश हैं इसलिये पुरुदेव हैं ।।८१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं युग मुख्याय नमः ।।८१५।। इस अवसर्पिणी काल के मुख्य होने से आप युगमुख्य कहे जाते हैं ।।८१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवाय नमः ।।८१६।। देवों के भी देव होने से आप अधिदेव हैं ।।८१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः ८१७।। इसी युग में सबसे बड़े होने से आप युगज्येष्ठ कहलाते हैं ।।८१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थितिदेशकाय नमः ।।८१८।। कर्मभूमि के प्रारम्भ में कर्मभूमि की स्थिति के मुख्य उपदेशक होने से आप युगादिस्थितिदेशक कहलाते हैं ।।८१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः ।।८१९।। आपके शरीर की कान्ति सुवर्ण के समान होने से कल्याण वर्ण हैं ।।८१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः ।।८२०।। कल्याण स्वरूप होने से आप कल्याण हैं ।।८२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय नमः ।।८२१।। सबके कल्याण करने में समर्थ होने से आप कल्य हैं ।।८२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्ष्मणाय नमः ।।८२२।। मंगलस्वरूप होने से अथवा कल्याणरूप लक्षणों को धारण करने से आप कल्याणलक्षण कहलाते हैं ।।८२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये नमः ।।८२३।। आपका स्वभाव ही कल्याणस्वरूप होने से आप कल्याण प्रकृति कहे जाते हैं ।।८२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने नमः ।।८२४।। चारों ओर प्रकाशमान होता हुआ पुण्य अथवा कल्याण ही आपका स्वभाव है, इसलिये आप दीप्तकल्याणात्मा कहे जाते हैं ।।८२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं विकल्पषाय नमः ।।८२५।। आप पाप रहित होने से विकल्पष हैं ।।८२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः ।।८२६।। काम आदि कलंक से रहित होने के कारण आप विकलंक हैं ।।८२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः ।।८२७।। आप शरीर रहित होने से कलातीत हैं ।।८२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः ।।८२८।। आप पापों को नाश करने वाले होने से कलिलघ्न हैं ।।८२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः ।।८२९।। अनेक कलाओं को धारण करने से आप कलाधर हैं ।।८२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः ।।८३०।। इंद्रादि सभी देवों के देव होने से आप देव देव हैं ।।८३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः ।।८३१।। आप तीनों लोकों के स्वामी होने से जगन्नाथ कहलाते हैं ।।८३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बंधवे नमः ।।८३२।। आप तीनों लोकों की हित भावना रखने से जगत्बंधु हैं ।।८३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः ।।८३३।। समस्त जगत् के प्रभु होने से आप जगद्विभु हैं ।।८३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषे नमः ।।८३४।। तीनों लोकों के लिये कल्याण करने की इच्छा रखने से आप जगद्धितैषी हैं ।।८३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः ।।८३५।। तीनों लोकों के जानने से आप लोकज्ञ हैं ।।८३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः ।।८३६।। केवलज्ञान के द्वारा सब जगह व्याप्त होने से आप सर्वग हैं ।।८३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः ।।८३७।। समस्त जगत में श्रेष्ठ होने से अथवा जगत् के मुख्य स्थान में उत्पन्न होने से आप जगतग्रज हैं ।।८३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं चराचर गुरुवे नमः ।।८३८।। आप त्रस, स्थावर आदि सभी जीवों के गुरू होने से चराचर गुरू हैं ।।८३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः ।।८३९।। हृदय में बड़े यत्न से स्थापना करने के योग्य होने से आप गोप्य हैं ।।८३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़ात्मने नमः ।।८४०।। आपका स्वरूप अत्यन्त गुप्त होने से आप गूढात्मा हैं ।।८४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़ गोचराय नमः ।।८४१।। गूढ़ अर्थात् जीवादि पदार्थों के जानने से आप गूढ़ गोचर हैं ।।८४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्यो जाताय नमः ।।८४२।। सदा तुरन्त ही उत्पन्न होने के समान देख पड़ते हैं अर्थात् सदा नवीन ही जान पड़ते हैं इसलिये आप सद्योजात हैं ।।८४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः ।।८४३।। आप प्रकाशरूप होने से प्रकाशात्मा हैं ।।८४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलनज्वलनसप्रभाय नमः ।।८४४।। प्रज्वलित हुई अग्नि के समान देदीप्यमान होने से आप ज्वलन ज्वलन सप्रभ कहलाते हैं ।।८४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदित्य वर्णाय नमः ।।८४५।। सूर्य के समान तेजस्वी होने से आप आदित्य वर्ण कहलाते हैं ।।८४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः ।।८४६।। सुवर्ण के समान कान्तियुक्त होने से आप भर्माभ हैं ।।८४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः ।।८४७।। मन के लिये आनन्द दायक सुन्दर कान्ति होने से आप सुप्रभ हैं ।।८४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः ।।८४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः ।।८४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः ।।८५०।।

सुवर्ण के समान उज्वल कान्तियुक्त होते से आप कनकप्रभ हैं ।।८४८।। सुवर्णवर्ण हैं ।।८४९।। तथा रुक्माभ कहे जाते हैं ।।८५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यं कोटिसमप्रभाय नमः ॥८५१॥ करोड़ों सूर्यों के समान प्रभा होने से आप सूर्य कोटिसमप्रभ हैं ॥८५१॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः ॥८५२॥ सुवर्ण के समान सुन्दर पीतवर्ण होने से आप तपनीय-निभा कहलाते हैं ॥८५२॥

ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः ॥८५३॥ ऊंचे शरीर को धारण करने से आप तुंग हैं ॥८५३॥

ॐ ह्रीं अर्हं बालार्कभाय नमः ॥८५४॥ प्रातःकाल के उदय होते हुए सूर्य के समान कान्तिमान और सुन्दर होने के कारण आप बालार्कभ कहलाते हैं ॥८५४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिलप्रभाय नमः ॥८५५॥ अग्नि के समान प्रभावान् होने से आप अनिलप्रभ हैं ॥८५५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सन्ध्याभ्रुबभ्रुवे नमः ॥८५६॥ सन्ध्या के बादलों के समान सुन्दर वर्ण होने से आप सन्ध्याभ्रुबभ्रु कहलाते हैं ॥८५६॥

ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः ॥८५७॥ सुवर्ण के समान होने से आप हेमाभ हैं ॥८५७॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकर प्रभाय नमः ॥८५८॥ सुवर्ण के समान कान्तियुक्त होने से आप चामीकरप्रभ कहलाते हैं ॥८५८॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्तप्तकनकच्छायाय नमः ॥८५९॥ कनत्कांचन सन्निभायाय नमः ॥८६०॥ हिरण्यवर्णाय नमः ॥८६१॥ स्वर्णाभाय नमः ॥८६२॥ शांतिकुंभनिभ प्रभाय नमः ॥८६३॥ द्युम्नाभाय नमः ॥८६४॥ जातरूपाभाय नमः ॥८६५॥ तप्तजाम्बूनदद्युतये नमः ॥८६६॥ सुधौत कलधौत श्रिये नमः ॥८६७॥ हाटकद्युतये नमः ॥८६८॥

सुवर्ण के समान उज्ज्वल और कांतियुक्त होने से आप निष्तप्तकनकच्छाया ॥८५९॥ कनत्कांचन सन्निभा ॥८६०॥ हिरण्यवर्णा ॥८६१॥ स्वर्णाभा ॥८६२॥ शांतकुंभनभप्रभा ॥८६३॥ द्युम्नाभा ॥८६४॥ जातरूपाभ ॥८६५॥ तप्तजाम्बूनद द्युति ॥८६६॥ सुधौतकलधौत श्री ॥८६७॥ और हाटकद्युति कहलाते हैं ॥८६८॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः ॥८६९॥ देदीप्यमान होने से आप प्रदीप्त कहलाते हैं ॥८६९॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः ॥८७०॥ इंद्रादि उत्तम पुरुषों को प्रिय होने से आप शिष्टेष्ट हैं ॥८७०॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः ॥८७१॥ पुष्टि के दाता होने से आप पुष्टिदाता हैं ॥८७१॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः ॥८७२॥ महाबलवान् होने से आप पुष्ट हैं ॥८७२॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः ॥८७३॥ सबको प्रगट दिखाई देने से आप स्पष्ट हैं ॥८७३॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः ॥८७४॥ आपकी वाणी स्पष्ट तथा आनन्ददायनी होने से आप स्पष्टाक्षर हैं ॥८७४॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः ॥८७५॥ आप समर्थ होने से क्षम हैं ॥८७५॥

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः ॥८७६॥ कर्म रूपी शत्रुओं को नाश करने से आप शत्रुघ्न कहलाते हैं ॥८७६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः ॥८७७॥ क्रोध रहित होने से आप अप्रतिग हैं ॥८७७॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः ॥८७८॥ सफल अर्थात् कृतकृत्य होने से आप अमोघ हैं ॥८७८॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्त्रे नमः ॥८७९॥ धर्मोपदेश देने से आप प्रशास्ता हैं ॥८७९॥

ॐ ह्रीं अर्हं शासिताय नमः ।।८८०।। आप रक्षक होने से शासिता हैं ।।८८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वभुवे नमः ।।८८१।। अपने आप उत्पन्न होने से आप स्वयंभू हैं ।।८८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तनिष्ठाय नमः ।।८८२।। काम, क्रोध, आदि को नष्ट करने से अथवा शान्त होने से आप शान्तनिष्ठ हैं ।।८८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः ।।८८३।। मुनियों में श्रेष्ठ होने से आप मुनि ज्येष्ठ हैं ।।८८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः ।।८८४।। सुख की परम्परा होने से आप शिवतात है ।।८८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः ।।८८५।। कल्याण के दाता होने से आप शिवप्रद हैं ।।८८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिदाय नमः ।।८८६।। शान्तिदायक होने से आप शान्तिद हैं ।।८८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिकृताय नमः ।।८८७।। समस्त उपद्रवों को शान्त करने से आप शान्तिकृत हैं ।।८८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः ।।८८८।। कर्मों का क्षय करने से आप शान्ति हैं ।।८८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं कान्तिमते नमः ।।८८९।। कान्तियुक्त होने से आप कान्तिमान् हैं ।।८८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः ।।८९०।। मनवांछित फलों को देने वाले होने से आप कामितप्रभ हैं ।।८९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये नमः ।।८९१।। कल्याण के समुद्र होने से आप श्रेयोनिधि हैं ।।८९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः ।।८९२।। धर्म के मूल कारण और आधार होने से आप अधिष्ठान हैं ।।८९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः ।।८९३।। अपने आप ही ईश्वर होने से आप अप्रतिष्ठ हैं ।।८९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः ।।८९४।। सब जगह प्रतिष्ठित होने से आप प्रतिष्ठित हैं ।।८९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः ।।८९५।। अतिशय स्थिर होने से आप सुस्थित हैं ।।८९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय नमः ।।८९६।। विहार रहित होने आप स्थावर हैं ।।८९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः ।।८९७।। निश्चल होने से आप स्थाणु हैं ।।८९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथीयसे नमः ।।८९८।। विस्तृत होने से आप पृथीयान हैं ।।८९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः ८९९।। अतिशय प्रसिद्ध होने से आप प्रथित हैं ।।८९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः ।।९००।। बहुत बड़े होने से आप पृथु कहलाते हैं ।।९००।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः ।।९०१।। दिशारूप वस्त्र धारण करने से आप दिग्वासा हैं ।।९०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं वातरशनाय नमः ।।९०२।। वायुरूपी करधनी को धारण करने वाले होने से आप वातरशन हैं ।।९०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थेशाय नमः ।।९०३।। निर्ग्रन्थ मुनियों में भी श्रेष्ठ होने से आप निर्ग्रन्थेश हैं ।।९०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरम्बराय नमः ।।९०४।। वस्त्र रहित होने से आप निरम्बर हैं ।।९०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्किंचनाय नमः ।।९०५।। परिग्रह रहित होने से आप निष्कंचन हैं ।।९०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः ।।९०६।। इच्छा अथवा आशा रहित होने से आप निराशंस हैं ।।९०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः ।।९०७।। ज्ञानरूपी नेत्रों को धारण करने से आप ज्ञानचक्षु कहलाते हैं ।।९०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः ।।९०८।। अत्यन्त निर्मोह होने से आप अमोमुह हैं ।।९०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः ।।६०९।। तेज के समूह होने से आप तेजोराशि है ।।६०९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतौजसे नमः ।।६१०।। अनन्त पराक्रमी होने से आप अनन्तौजा हैं ।।६१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञानाब्धये नमः ।।६११।। ज्ञान का सागर होने से आप ज्ञानाब्धि हैं ।।६११।।

ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः ।।६१२।। शील के सागर अथवा स्वस्वभाव के सागर होने से आप शीलसागर कहलाते हैं ।।६१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः ।।६१३।। तेजरूप होने से आप तेजोमय हैं ।।६१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः ।।६१४।। अनन्त ज्योति के धारक होने से आप अमितज्योति कहलाते हैं ।।६१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः ।।६१५।। तेजस्वरूप होने से आप ज्योतिमूर्ति हैं ।।६१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः ।।६१६।। अज्ञान रूपी अन्धकार के नाश हो जाने से आप तमोपह कहलाते हैं ।।६१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूड़ामणये नमः ।।६१७।। तीनों लोकों के मस्तक के रत्न होने से आप जगत् के चूड़ामणि कहलाते हैं ।।६१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तये नमः ।।६१८।। तेजस्वी होने के कारण अथवा प्रकाशमान होने से आप दीप्त हैं ।।६१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः ।।६१९।। अत्यन्त सुखी होने से आप शंवान् कहलाते हैं ।।६१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः ।।६२०।। विघ्नों के अथवा अन्तराय कर्मों के नाश होने से आप विघ्नविनायक कहलाते हैं ।।६२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः ।।६२१।। दोषों को दूर करने से आप कलिघ्न है ।।६२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः ।।६२२।। कर्म रूपी शत्रुओं का नाश करने से आप कर्मशत्रुघ्न हैं ।।६२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकप्रकाशाय नमः ।।६२३।। लोक और अलोक को देखने और जानने वाले होने से आप लोकालोक प्रकाशक हैं ।।६२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालुवे नमः ।।६२४।। निद्रा रहित होने से आप अनिद्रालु हैं ।।६२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालुवे नमः ।।६२५।। प्रमाद रहित होने से आप अतन्द्रालु हैं ।।६२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं जागरूकाय नमः ।।६२६।। अपने स्वरूप की सिद्धि के लिए सदा जागरूक रहने से आप जागरूक कहलाते हैं ।।६२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय नमः ।।६२७।। आप ज्ञानरूप होने से प्रमामय हैं ।।६२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीपतये नमः ।।६२८।। मोक्षरूपी अविनाशी लक्ष्मी के स्वामी होने से आप लक्ष्मीपति हैं ।।६२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतये नमः ।।६२९।। जगत् को प्रकाशित करने से आप जगज्योति हैं ।।६२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः ।।६३०।। धर्म के स्वामी होने से आप धर्म के राजा हैं ।।६३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः ।।६३१।। प्रजा के हितैषी होने से आप प्रजाहित कहलाते हैं ।।६३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः ।।६३२।। निर्वाण के अभिरूप होने से आप मुमुक्षु कहलाते हैं ।।६३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं बंधमोक्षज्ञाय नमः ।।६३३।। बंध और मोक्ष का स्वरूप जानने से आप बंध मोक्षज्ञ हैं ।।६३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः ।।६३४।। आप इन्द्रियों को जीतने से जिताक्ष हैं ।।६३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः ।।६३५।। कामदेव को जीतने से आप जितमन्मथ कहलाते हैं ।।६३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतरसशैलुषाय नमः ।।६३६।। शान्तरूपी रसामृत का पान करने से आप प्रशान्त रसशैलूष कहलाते हैं ।।६३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः ।।६३७।। भव्य जीवों के समुदाय के नायक होने से आप भव्यपेटकनायक कहलाते हैं ।।६३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्ताय नमः ।।६३८।। धर्म के मुख्य प्रकाशक होने से आप मूलकर्ता हैं ।।६३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्योतिषे नमः ।।६३९।। अनन्त ज्योति स्वरूप होने से आप जगज्योति हैं ।।६३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः ।।६४०।। रागद्वेषादि मल को नाश करने से आप मलघ्न हैं ।।६४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः ।।६४१।। आप मोक्ष के मूल कारण होने से मूलकारण हैं ।।६४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः ।।६४२।। यथार्थ वक्ता होने से आप आप्त हैं ।।६४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः ।।६४३।। स्व प्रकाश की वाणी के स्वामी होने से आप वागीश्वर कहलाते हैं ।।६४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः ।।६४४।। कल्याणस्वरूप होने से आप श्रेयान् हैं ।।६४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः ।।६४५।। आपकी वाणी कल्याणरूप होने से आप श्रायसोक्ति कहलाते हैं ।।६४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे नमः ।।६४६।। निःसन्देह वाणी होने से आप निरुक्तवाक् कहलाते हैं ।।६४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः ।।६४७।। सबसे उत्तम वक्ता होने से आप प्रवक्ता हैं ।।६४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः ।।६४८।। सब प्रकार के वचनों के स्वामी होने से आप वचसामीश हैं ।।६४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः ।।६४९।। कामदेव को जीतने से आप मारजित हैं ।।६४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभावविदाय नमः ।।६५०।। संसार के समस्त पदार्थों को जानने से अथवा समस्त प्राणियों के अभिप्राय जानने से आप विश्वभाववित् कहलाते हैं ।।६५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुतनुवे नमः ।।६५१।। उत्कृष्ट शरीर को धारण करने से आप सुतनु हैं ।।६५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः ।।६५२।। शरीर रहित होने से आप तनुनिर्मुक्त हैं ।।६५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः ।।६५३।। आत्मा में तल्लीन होने से अथवा सम्यग्ज्ञान धारण करने से आप सुगत हैं ।।६५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः ।।६५४।। मिथ्यादृष्टियों की खोटी नयों का नाश करने से आप हतदुर्नय हैं ।।६५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः ।।९५५।। अंतरंग और बाह्यलक्ष्मी के स्वामी होने से आप श्रीश हैं ।।९५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः ।।९५६।। आपके चरण कमलों की सेवा लक्ष्मी करती है इसलिए आप श्रीश्रितपादाब्ज हैं ।।९५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतभीराय नमः ।।९५७।। भय रहित होने से आप वीतभीर हैं ।।९५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः ।।९५८।। भक्त लोगों के भय दूर करने से आप अभयंकर हैं ।।९५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः ।।९५९।। समस्त दोषों को नष्ट कर देने से आप उत्सन्न दोष कहलाते हैं ।।९५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः ।।९६०।। विघ्न रहित होने से आप निर्विघ्न हैं ।।९६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चिलाय नमः ।।९६१।। स्थिर होने से आप निश्चल हैं ।।९६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय नमः ।।९६२।। लोगों को अत्यन्त प्रिय होने से आप लोकवत्सल कहे जाते हैं ।।९६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः ।।९६३।। समस्त लोक में उत्कृष्ट होने से आप लोकोत्तर हैं ।।९६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः ।।९६४।। तीनों लोकों के स्वामी होने से आप लोकपति हैं ।।९६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे नमः ।।९६५।। समस्त लोक की चक्षु के समान यथार्थ पदार्थों के दर्शन होने से आप लोकचक्षु हैं ।।९६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये नमः ।।९६६।। अनंतज्ञान को धारण करने से आप अपारधी हैं ।।९६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः ।।९६७।। आप का ज्ञान सदा स्थिर रहता है इसलिये आप धीरधी हैं ।।९६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धसन्मार्गाय नमः ।।९६८।। यथार्थ मोक्षमार्ग को जानने से आप बुद्ध सन्मार्ग हैं ।।९६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः ।।९६९।। शुद्ध स्वरूप होने से आप शुद्ध हैं ।।९६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनृतपूतवाचे नमः ।।९७०।। आपके वचन यथार्थ और पवित्र होने से आप सुनृतपूतवाक् हैं ।।९७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः ।।९७१।। बुद्धि के पारगामी होने से आप प्रज्ञापारमित हैं ।।९७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञायनमः ।।९७२।। अतिशय बुद्धिमान होने से आप प्राज्ञ हैं ।।९७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं यतिये नमः ।।९७३।। मन को जीतने से अथवा सदा मोक्षमार्ग का प्रयत्न करने से आप यति हैं ।।९७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेंद्रियाय नमः ।।९७४।। इन्द्रियों को वश में करने से आप नियमितेंद्रिय हैं ।।९७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं भदंताय नमः ।।९७५।। आप पूज्य होने से भदंत हैं ।।९७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः ।।९७६।। कल्याणकारी होने से आप भद्रकृत हैं ।।९७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः ॥९७७॥ निष्कपट अथवा कल्याणस्वरूप होने से आप भद्र हैं ॥९७७॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः ॥९७८॥ इच्छित पदार्थों के दाता होने से आप कल्पवृक्ष है ॥९७८॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः ॥९७९॥ इष्ट पदार्थों की प्राप्ति करा देने से आप वरप्रद कहलाते हैं ॥९७९॥

ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलित कर्मारये नमः ॥९८०॥ कर्मरूप शत्रुओं को उखाड़ फेंक देने से आप समुन्मूलित कर्मारि कहे जाते हैं ॥९८०॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठशुशुक्षिणये नमः ॥९८१॥ कर्मरूपी लकड़ी को जलाने के लिये आप अग्नि के समान हैं इसलिए आप कर्मकाष्ठशुशक्षणि हैं ॥९८१॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः ॥९८२॥ क्रिया अर्थात् चारित्र में नितांत कुशल होने से आप कर्मण्य हैं ॥९८२॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः ॥९८३॥ क्रिया करने में शूरवीर अथवा सर्वथा तैयार रहने से आप कर्मठ हैं ॥९८३॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः ॥९८४॥ सबसे ऊँचे अर्थात् उत्कृष्ट या प्रकाशमान होने से आप प्रांशु हैं ॥९८४॥

ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणाय नमः ॥९८५॥ त्यागने योग्य और ग्रहण करने योग्य पदार्थों के जानने में चतुर होने से आप हेयादेय विचक्षण कहलाते हैं ॥९८५॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतशक्तये नमः ॥९८६॥ आप में अनन्त शक्तियां प्रगट होने से आप अनंत शक्ति हैं ॥९८६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः ॥९८७॥ छिन्न भिन्न करने योग्य न होने से आप अछेद हैं ॥९८७॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः ॥९८८॥ जन्म-जरा और मरण इन तीनों को नाश करने से आप त्रिपुरारि कहलाते हैं ॥९८८॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः ॥९८९॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः ॥९९०॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यंबकायनमः ॥९९१॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षायनमः ॥९९२॥ भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनों कालों के जानने और देखने से आप त्रिलोचन ॥९८९॥ त्रिनेत्र ॥९९०॥ त्र्यंबक ॥९९१॥ तथा त्र्यक्ष कहे जाते हैं। ॥९९२॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः ॥९९३॥ केवलज्ञान ही आप के नेत्र होने से आप केवलज्ञान वीक्षण कहलाते हैं ॥९९३॥

ॐ ह्रीं अर्हं समंतभद्राय नमः ॥९९४॥ सर्वथा मंगल स्वरूप होने से आप समंतभद्र हैं ॥९९४॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतारिणे नमः ॥९९५॥ कर्मरूप शत्रुओं को नाश करने से आप शांतारि हैं ॥९९५॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः ॥९९६॥ धर्म के आचार्य होने से आप धर्माचार्य हैं ॥९९६॥

ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः ॥९९७॥ जीवों पर अतिशय दया करने से आप दयानिधि हैं ॥९९७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिये नमः ॥९९८॥ सूक्ष्म पदार्थों को भी साक्षात् देखने से आप सूक्ष्मदर्शी कहलाते हैं ॥९९८॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः ॥९९९॥ कामदेव को जीतने से आप जितानंग हैं ॥९९९॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृपालुवे नमः ॥१०००॥ दयावान होने से आप कृपालु है ॥१०००॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकजिनाय नमः ॥१००१॥ धर्म का उपदेश देने से आप धर्मदेशक कहलाते हैं ॥१००१॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः ॥१००२॥ मोक्षरूप शुभ को प्राप्त करा देने से आप शुभंयु हैं ॥१००२॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूताय नमः ॥१००३॥ सुख को अपने स्वाधीन करने से आप सुखसाद्भूत कहलाते हैं ॥१००३॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये नमः ॥१००४॥ पुण्य की राशि (समूह) होने से आप पुण्यराशि कहे जाते हैं ॥१००४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः ॥१००५॥ रोग रहित होने से आप अनामय हैं ॥१००५॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः ॥१००६॥ धर्म की रक्षा करने से आप धर्मपाल हैं ॥१००६॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः ॥१००७॥ जगत् की रक्षा करने से आप जगत्पाल हैं ॥१००७॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः ॥१००८॥ आप धर्मरूप साम्राज्य के स्वामी होने से धर्मसाम्राज्यनायक कहलाते हैं ॥१००८॥

इति अष्टोत्तर सहस्रनाम समाप्तः ॥

दोहा

दश शत अष्टोत्तर कहे सार्थक श्री जिननाम।
पढ़ें सुने जे भविक जन पावें सौख्य ललाम ॥१॥

इस प्रकार महा तेजस्वी श्री जिनेन्द्र देव के विद्वान् लोगों ने ये एक हजार आठ नाम संचय किये हैं। जो पुरुष इन नामों का स्मरण करता है उसकी स्मृति बहुत ही पवित्र हो जाती है ॥

इति श्री अर्हद् भगवद् गुण वर्णन समाप्तः ॥१॥

अथ निकल परमात्मा (सिद्ध) गुण प्रारम्भः॥ कैसे है सिद्ध भगवान्? वे अष्टकर्मों के अभाव से प्रादुर्भाव सम्यक्त्वादि अष्ट गुणों से सुशोभित हैं ॥

अष्ट गुणनाम श्लोकः

सम्यक्त्वदर्शनं ज्ञानमनंतवीर्यमद्भुतम्।
सौक्ष्म्यावगाहयाव्याबाधाः सहागुरुलघुत्वकाः ॥१॥

सोरठा

समकित दर्शन ज्ञान, अगुरु लघूअवगाहना।
सूक्ष्मवीरजवान, निराबाधगुणसिद्ध के ॥२॥

अर्थात् सम्यक्त्वादि अष्ट गुण सिद्ध भगवान् के मोहनीयादि कर्म के अभाव से प्रादुर्भूत व्यवहार मात्र कहे हैं। निश्चय से तो अनंतगुण हैं।

भावार्थ—मोहनीय कर्म के अभाव से क्षायिकसम्यक्त्व प्रगट हुआ ॥१॥ दर्शनावरणी कर्म के अभाव से केवलदर्शन प्रगट हुआ ॥२॥ और ज्ञानावरणी के दूर होने से केवलज्ञान प्रगट हुआ ॥३॥ अंतराय कर्म के अभाव से अनंत बल प्रगट हुआ ॥४॥ आयु कर्म के अभाव से अवगाहनत्व गुण प्रगट हुआ ॥५॥